सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 228 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार 26 सितम्बर, 2026
मूल्य ₹ 3/-

हैप्पीनेस कोई रेडीमेड चीज नहीं है। ये आपके अपने कर्मों से आती है।
-ब्रह्माकुमारी शिवानी

भारत-वेस्टइंडीज के बीच पहला वनडे... 7 | जन की सोच पर जनप्रतिनिधि... 3 | सरकार ने एमएसएमई क्षेत्र को... 2

विपक्ष बोला - ज्ञानेश हटाओ
बीजेपी बोली-पद्म भूषण दिलाओ

एक तरफ इस्तीफे की मांग, दूसरी तरफ सम्मान की सिफारिश

» सीईसी ज्ञानेश कुमार को लेकर सियासी पारा चरम पर
» वीआईपी पार्टी के मुखिया मुकेश साहनी का बयान एक खून माफ होता तो गोली मार देता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश की सियासत में इन दिनों एक ऐसे किरदार का उदय हुआ है जिसके नाम के इर्द गिर्द सत्ता विपक्ष चुनाव और संविधान चारों की बहस घूम रही है। नाम है ज्ञानेश कुमार एक तरफ विपक्ष कह रहा है हटाओ तो दूसरी तरफ बंगाल बीजेपी अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य कह रहे हैं कि कम से कम उन्हें पद्म भूषण दिलाओ।

ज्ञानेश कुमार को विपक्ष द्वारा उन्हें पद से हटाने की तैयारियों के बीच इस बयान ने सम्पूर्ण विपक्ष को चिढ़ाने का काम किया है और यहीं से कहानी में वह ट्विस्ट आता है कि जहां राजनीति का कैमरा अचानक स्लो मोशन में घूमने लगता है पर्दे पर ज्ञानेश कुमार हैं पीछे चुनाव आयोग है एक तरफ एसआईआर है दूसरी तरफ वोटर लिस्ट है सामने विपक्ष है और पीछे सत्ता पक्ष का बचाव है। इन सभी के बीच देश का मतदाता खड़ा है और पूछ रहा है कि आखिर माजरा क्या है।

क्या पद पर बने रह पाएंगे ज्ञानेश कुमार

सड़क पर विरोध संसद में प्रस्ताव और विपक्ष के नेताओं के लगातार हमले कहानी तेजी से उस मोड़ पर पहुंच रही है जहां सवाल यह नहीं रह गया कि विपक्ष ज्ञानेश कुमार से इस्तीफा मांग रहा है या नहीं, बल्कि सवाल यह है कि क्या ज्ञानेश कुमार इस बढ़ते राजनीतिक और संवैधानिक दबाव के बीच अपने पद पर बने रह पाएंगे? राहुल गांधी चुनावी प्रक्रिया को लेकर लगातार गंभीर सवाल उठा रहे हैं। प्रियंका गांधी ने भी कार्रवाई की मांग की है। ममता बनर्जी से लेकर तेजस्वी यादव और अखिलेश यादव तक विपक्षी खेमे के अलग अलग नेता चुनाव आयोग की भूमिका पर सवाल उठा रहे हैं। विपक्ष का आरोप है कि चुनावी प्रक्रिया और मतदाता सूची से जुड़े फैसलों ने लोकतांत्रिक भरोसे को चोट पहुंचाई है।

कम से कम पदम भूषण मिलना चाहिए

कहानी सिर्फ सियासी बयानबाजी तक सीमित नहीं है। चुनाव आयोग के दो आयुक्तों सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी की ओर से आयोग के कुछ फैसलों को लेकर आपत्तियां दर्ज किए जाने की रिपोर्ट सामने आने के बाद विपक्ष ने ज्ञानेश कुमार के खिलाफ हमला तेज किया है। रिपोर्टों के मुताबिक ऐसी आपत्तियां कई मौकों पर दर्ज की गई थीं। राहुल गांधी ने भी ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की है और चुनाव प्रक्रिया तथा एसआईआर को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं। इसी बीच ज्ञानेश कुमार के मेरठ और वाराणसी के प्रस्तावित कार्यक्रम भी स्थगित हो गए। गौरतलब है कि राजनीति में कहानी सिर्फ वही नहीं होती जो कही जाती है कहानी वह भी होती है जो उस बयान के बाद पैदा होती है। और समिक भट्टाचार्य का बयान इसी वजह से बड़ा हो गया है उन्होंने ज्ञानेश कुमार की चुनाव प्रबंधन और एसआईआर को लेकर तारीफ की और कहा कि उन्हें कम से कम पद्म भूषण मिलना चाहिए।

पद्म भूषण आखिर मिलता किसे है?

क्या किसी चुनाव को शांतिपूर्ण तरीके से कराने का दावा अपने आप किसी व्यक्ति को इस सम्मान का हकदार बना देता है? या फिर पद्म पुरस्कारों के लिए उपलब्धियों सार्वजनिक सेवा और लंबे प्रभाव का व्यापक मूल्यांकन होता है। सरकारी नियमों के मुताबिक पद्म पुरस्कारों में कोई कठोर एकल फॉर्मूला नहीं है। चयन समिति उपलब्धियों के साथ सार्वजनिक सेवा और एक्सीलेंस प्लस जैसे मानकों को देखती है। नामांकन की प्रक्रिया में सरकारों, मंत्रियों, सांसदों के साथ आम नागरिकों तक से सिफारिशें आ सकती हैं और अंतिम चयन निर्धारित प्रक्रिया से होता है। तो फिर इस वक्त असली सवाल सिर्फ यह नहीं कि ज्ञानेश कुमार को पद्म भूषण मिलेगा या नहीं। असली सवाल यह है कि एक ही व्यक्ति को लेकर देश की राजनीति में दो बिल्कुल विपरीत पटकथाएं क्यों लिखी जा रही है। बीजेपी का बंगाल नेतृत्व कह रहा है सम्मान दो और देश के प्रमुख सियासी दल उन्हें पद से बर्खास्त किये जाने तक की मांग कर रहे हैं।

एक खून माफ होता तो गोली मार देता

सियासत में विरोध की भाषा तीखी हो सकती है आरोप गंभीर हो सकते हैं और सत्ता के खिलाफ गुस्सा भी खुलकर जाहिर किया जा सकता है। लेकिन जब बात गोली मारने तक पहुंच जाए तो बहस अचानक दूसरे मोड़ पर चली जाती है। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को लेकर वीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी ने पटना में ऐसा ही बयान दिया। सहनी ने कहा कि अगर उन्हें एक हत्या माफ होने की छूट मिल जाए तो वे सबसे पहले ज्ञानेश कुमार को गोली मार देंगे। उन्होंने अपने बयान में चुनाव आयोग पर गंभीर आरोप लगाए और कहा कि संविधान के साथ खिलवाड़ हो रहा है। सहनी का हमला यहीं नहीं रुका। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में ज्ञानेश कुमार बचेंगे नहीं और 2029 में राहुल गांधी के नेतृत्व में सरकार बनने पर उनका जेल जाना पक्का है।

सरकार ने एमएसएमई क्षेत्र को बर्बाद कर दिया : अखिलेश यादव

» बोले सपा प्रमुख- निवेश व मोबाइल निर्माण को लेकर भी भ्रामक दावे किए जा रहे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने एकबार फिर भाजपा सरकार पर करारा प्रहार किया है। सपा प्रमुख ने कहा उत्तर प्रदेश में कोई वास्तविक निवेश नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि सरकार ने एमएसएमई क्षेत्र को बर्बाद कर दिया और मोबाइल निर्माण को लेकर भी भ्रामक दावे किए जा रहे हैं। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार निवेश का झूठा प्रचार करती रही और कोई निवेश नहीं हुआ।

सपा मुख्यालय से जारी एक बयान के अनुसार, यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने मध्यम, लघु एवं सूक्ष्म उद्योग (एमएसएमई) इकाइयों को बर्बाद कर दिया और निवेशकों ने कोई निवेश नहीं किया। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अपने करीबियों को आगे बढ़ा रही है। यादव ने भाजपा सरकार पर मोबाइल निर्माण को लेकर भी 'झूठा दावा' करने का आरोप लगाया और कहा कि प्रदेश में मोबाइल का निर्माण नहीं हो रहा, बल्कि केवल असेम्बल किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 2027 का विधानसभा चुनाव 'लोकतंत्र और संविधान बचाने का चुनाव' है। उन्होंने इसे जनता के लिए अंतिम अवसर बताया।

भाजपा लोकतंत्र को खत्म कर रही

यादव ने आरोप लगाया कि भाजपा लोकतंत्र को खत्म कर रही है तथा संवैधानिक संस्थाओं पर उसने कब्जा कर लिया है। इससे पहले शुक्रवार को केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने नोएडा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में 'इंटरनेशनल ट्रेड शो' की शुरुआत करते हुए सपा पर गंभीर आरोप लगाए थे। शाह ने कहा था कि 2013 में तत्कालीन राज्य सरकार ने दिल्ली में निवेशक सम्मेलन आयोजित किया था, क्योंकि लखनऊ में अधिकारियों ने कानून-व्यवस्था का हवाला देकर सम्मेलन कराने से इनकार कर दिया था।

सपा प्रमुख ने योगी पर लगाया आचार संहिता उल्लंघन का आरोप

सपा अध्यक्ष और पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने सीएम योगी आदित्यनाथ पर आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप लगाया है। सपा के प्रतिनिधिमंडल ने चुनाव आयोग को ज्ञापन देकर मांग की है कि आयोग को आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन को संज्ञान में लेकर मुख्यमंत्री को नोटिस जारी करना चाहिए। ज्ञापन में कहा गया है कि प्रदेश में विधान परिषद की 11 सीटों के लिए चुनावों की घोषणा होते ही 72 जिलों (कानपुर नगर, कानपुर देहात, उन्नाव छोड़कर) में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चुनाव की घोषणा होने के बाद 22 सितंबर को लखनऊ में इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में 3 हजार 567 शिक्षकों को नियुक्त पत्र दिया। इससे स्नातक और शिक्षक मतदाता प्रभावित हुए हैं। चुनाव आयोग ने 22 सितंबर को विधान परिषद की 11 सीटों के लिए चुनाव की घोषणा के साथ प्रदेश में आदर्श आचार संहिता को तत्काल प्रभाव से प्रभावी होने के लिए निर्देश जारी कर दिए हैं। ज्ञापन में यह भी कहा गया है कि सीएम ने 24 सितंबर को एक कार्यक्रम में 10 लाख लोगों को घर की सौगात देने की घोषणा की। यह घोषणा भी आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन है। इससे पहले 23 सितंबर को भारत टैक्सी का उद्घाटन करके आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन किया है। सपा ने मांग की है कि मुख्यमंत्री और सभी मंत्रियों के सभी कार्यक्रमों की वीडियोग्राफी कराई जाए और आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन पाए जाने पर उनके विरुद्ध कार्यवाही की जाए। अखिलेश यादव के निर्देश पर सपा के प्रदेश सचिव केके श्रीवास्तव, डॉ. हरिश्चंद्र सिंह यादव और राधेश्याम सिंह ने यह ज्ञापन सौपते हुए त्वरित कार्रवाई की मांग की है।

मोहम्मद शमी के खिलाफ चुनाव लड़ेंगी हसीन जहां

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अमरोहा। क्रिकेटर मोहम्मद शमी की रालोद के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयंत चौधरी से मुलाकात के बाद अमरोहा की राजनीति में सरगर्मी तेज हो गई है। शमी या उनके भाई हसीब अहमद के चुनाव लड़ने की अटकलों के बीच अब शमी की पत्नी हसीन जहां ने भी चुनाव लड़ने का एलान कर दिया है।

उन्होंने कहा कि शमी या उनके परिवार को कई व्यक्ति चुनाव लड़ेगा तो उन्हें हराने के लिए वह भी चुनाव लड़ेंगी। हालांकि वह अभी किसी राजनीतिक दल के संपर्क में नहीं हैं। परंतु समय आने पर वह अपने पत्ते खोलेंगी। पिछले दिनों क्रिकेटर मोहम्मद शमी ने दिल्ली में रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी से मुलाकात की थी। हालांकि उससे पहले उनके बड़े भाई हसीब अहमद के रालोद प्रत्याशी के रूप में अमरोहा विस सीट से चुनाव लड़ने की चर्चा चली थी। खुद हसीब ने चुनाव लड़ने से इनकार नहीं किया था। फिर शमी की जयंत चौधरी से मुलाकात के बाद इस चर्चा को बल मिल गया था। इसी बीच शुक्रवार को इस मामले में नया मोड़ आ गया है। मोहम्मद शमी की पत्नी हसीन जहां ने भी चुनाव लड़ने का एलान कर दिया है। शुक्रवार शाम मोबाइल काल पर हुई वार्ता में उन्होंने भी स्पष्ट कर दिया है कि वह मोहम्मद शमी या उनके परिवार के किसी भी सदस्य के सामने हर हाल में चुनाव लड़ेंगी। बोलीं कि मेरा मकसद हर हाल में शमी या उनके परिवार को पटखनी देना है। बोलीं कि शमी ने धोखा दिया है तथा उनके परिवार ने मुझे परेशान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। अभी वह किसी राजनीतिक दल के संपर्क में नहीं हैं। जरुरत पड़ी तो निर्दलीय भी चुनाव लड़ेंगी। बता दें कि मोहम्मद शमी व हसीन जहां की शादी 2014 में हुई थी तथा 2018 में दोनों के बीच विवाद हो गया था। परिवार में बेटी आएरा शमी उर्फ बेबो भी हैं। फिलहाल दोनों के बीच का विवाद कोर्ट में विचाराधीन हैं था दोनों अलग रह रहे हैं।

आजम खां के मंत्री रहते किन फर्मों को मिले ज्यादा काम, होगी जांच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। पूर्व मंत्री आजम खां की मुश्किलों में फिर इजाफा होने के आसार है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने उनके मंत्री रहने के दौरान जल निगम में हुए सभी कार्यों का ब्योरा राज्य सरकार से मांगा है। खासकर उनके मंत्री रहने के दौरान जिन फर्मों को अधिक कार्य दिए गए, उनके बारे में पूछा है। बता दें कि आजम खां, उनके बेटे अब्दुल्ला आजम और उनकी जौहर ट्रस्ट की जांच ईडी द्वारा की जा रही है।

सूत्रों के मुताबिक जौहर ट्रस्ट, जौहर विश्वविद्यालय की जांच के दौरान ईडी को जल निगम में वर्ष 2012 से 2019 के बीच बड़े पैमाने पर अनियमिताएं अंजाम दिए जाने के पुख्ता सुराग मिल रहे हैं। आजम खां वर्ष 2012 से 2017 तक नगर विकास विभाग के मंत्री थे, जिसके अधीन जल निगम भी था। वर्ष 2019 के बाद संबंधित कार्य जल

जीवन मिशन की स्थापना होने की वजह से उसके तहत कराए जाने लगे। आजम खां के मंत्री रहने के दौरान हुए कार्यों की विस्तृत जांच के लिए ईडी ने सभी कार्यों से संबंधित दस्तावेज तलब किए हैं। ये भी जानकारी देने को कहा है कि आजम खां के मंत्री रहने के दौरान कितनी निविदाएं स्वीकृत हुईं, किन फर्मों को प्रचार-प्रसार का काम दिया गया, कितना भुगतान हुआ और कितने अनुबंध किए गए। साथ ही इस दौरान किन अधिकारियों की तैनाती जल निगम में थी।

सीएम के खिलाफ एफआईआर हो : मीसा भारती

जमुई पीड़िता की तस्वीर पर बवाल, पुलिस पर उठाए सवाल, राजद नेत्री पहुंचीं थाने

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जमुई। जमुई में नाबालिग से बदसलूकी के मामले को लेकर मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के सोशल मीडिया हैंडल से पीड़िता और उसके परिवार के साथ तस्वीर साझा किए जाने पर विवाद बढ़ गया है। तस्वीर कुछ देर बाद हटा दी गई। विपक्ष ने आरोप लगाया है कि तस्वीर से पीड़िता की पहचान उजागर होने का खतरा पैदा हुआ। इसी मामले में पाटलिपुत्र की राजद सांसद डॉ. मीसा भारती सचिवालय थाना पहुंचीं और मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की।

मीसा भारती ने सोशल मीडिया पोस्ट में दावा किया कि वह पॉक्सो अधिनियम, 2012 की धारा 23 और किशोर न्याय अधिनियम, 2015 की धारा 74 के तहत प्राथमिकी दर्ज कराने पहुंची थीं, लेकिन थाना प्रभारी ने प्राथमिकी दर्ज करने से मना कर दिया। मीसा भारती ने कहा कि नाबालिग

पीड़िता की पहचान उजागर करना कानून के तहत गंभीर विषय है। उन्होंने बिहार पुलिस की कार्रवाई पर सवाल उठाते हुए कहा कि जमुई मामले से जुड़े वीडियो साझा करने वालों पर कार्रवाई की जा रही है, जबकि मुख्यमंत्री के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने से पुलिस पीछे हट रही है। मीसा भारती की ओर से प्राथमिकी दर्ज कराने की मांग किए जाने के बाद पुलिस की कार्रवाई पर सबकी नजर है। फिलहाल इस मामले में तस्वीर साझा किए जाने को लेकर राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप भी तेज हो गए हैं।

तेजस्वी यादव ने भी उठाए सवाल

राजद नेता तेजस्वी यादव ने भी मुख्यमंत्री के सोशल मीडिया हैंडल से तस्वीर साझा किए जाने पर सवाल उठाया है। उन्होंने आरोप लगाया कि इससे नाबालिग पीड़िता की पहचान उजागर हुई और पॉक्सो अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन हुआ।

मुख्यमंत्री से मुलाकात के बाद पोस्ट हुई थी तस्वीर

दरअसल, जमुई मामले की पीड़िता अपने परिवार के साथ मुख्यमंत्री से मिली थी। मुलाकात के बाद मुख्यमंत्री के एक्स हैंडल से परिवार के साथ तस्वीर और न्याय का भरोसा देने से जुड़ा संदेश पोस्ट किया गया था। विवाद बढ़ने के बाद पोस्ट हटा दी गई।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

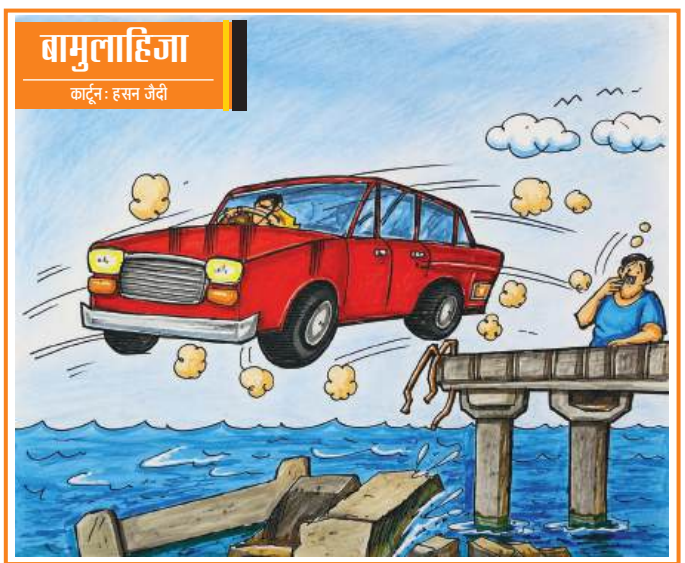

एससी-एसटी सांसदों को चर्चा में अधिक समय मिले : मांझी

» केंद्रीय मंत्री ने लिखा लोकसभा अध्यक्ष को पत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से संसद में महत्वपूर्ण विधेयकों पर चर्चा के दौरान एससी-एसटी सांसदों को बोलने का पर्याप्त समय देने का आग्रह किया है। यह मांग भाजपा सांसद गजेंद्र सिंह पटेल द्वारा राजग सांसद संवाद बैठक में उठाए गए मुद्दे के आधार पर की गई है।

केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर संसद में महत्वपूर्ण विधेयकों पर चर्चा के दौरान अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति (एससी-एसटी) समुदायों से संबंधित सांसदों को बोलने का पर्याप्त समय देने के अनुरोध पर कार्रवाई करने की मांग की। अपने पत्र में मांझी ने कहा कि मध्यप्रदेश के खरगोन का प्रतिनिधित्व करने वाले भाजपा सांसद गजेंद्र सिंह पटेल ने पांच अगस्त को मांझी के दिल्ली स्थित आवास पर आयोजित 'राजग सांसद समूह संवाद बैठक' के दौरान यह मुद्दा उठाया था। मंत्री ने कहा कि पटेल ने विशेष रूप से अनुरोध किया था कि एससी-एसटी सांसदों को सदन में अपने समुदायों से जुड़े मुद्दे उठाने के लिए पर्याप्त अवसर दिया जाए। मांझी ने लोकसभा अध्यक्ष से पटेल के अनुरोध पर आगे कार्रवाई करने और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश जारी करने का अनुरोध किया है।

पटेल ने पुष्टि की कि उन्होंने यह मुद्दा उठाया था और कहा कि एससी-एसटी सांसदों को दिया जाने वाला समय और बढ़ाया जाना चाहिए, क्योंकि किसी राजनीतिक दल को आवंटित समय उसके सांसदों के बीच विभाजित हो जाता है। उन्होंने कहा, 'ऐसा नहीं है कि हमें समय नहीं मिलता, लेकिन हमें और अधिक समय मिलना चाहिए। एससी-एसटी समुदायों से जुड़े अधिक मुद्दे उठाए जाने चाहिए।

जन की सोच पर जनप्रतिनिधि कर रहे चोट

चार साल में 111 सांसद-विधायकों ने अपने जीते हुए दल को छोड़ा

» एडीआर की रिपोर्ट में खुलासा

» विपक्ष कमजोर पड़ा और कई राज्यों में सत्ता का पूरा गणित बदल गया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कभी-कभी लोकतंत्र में जैसा जनता सोचती है वैसा ही हो जरूरी नहीं है। अब एक ऐसी रिपोर्ट आई है जिसने चौंका दिया है। चार साल में 111 सांसद-विधायकों ने अपने जीते हुए दल को छोड़ा है। जिसकी वजह से 6 राज्यों में सत्ता की तस्वीर बदल गई। इसका खुलासा एडीआर की रिपोर्ट में हुआ है। इसके अनुसार 2022 से 2026 के बीच 111 सांसद और विधायक चुनाव जीतने के बाद दूसरी पार्टियों में चले गए।

चुनाव खत्म होने के बाद देश के कई राज्यों में राजनीतिक तस्वीर वैसी नहीं रही जैसी मतदाताओं ने वोटिंग के दिन बनाई थी, पिछले चार वर्षों में 111 सांसद और विधायकों ने पार्टी बदली, जिससे कहीं सरकारें मजबूत हुईं। कहीं विपक्ष कमजोर पड़ा और कई राज्यों में सत्ता का पूरा गणित बदल गया। रिपोर्ट बताती है कि 2022 से 2026 के बीच हुए इस बड़े राजनीतिक पलायन ने नागालैंड, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, गोवा, महाराष्ट्र और मणिपुर समेत कई राज्यों की सत्ता और विपक्ष की तस्वीर बदलकर रख दी।

सबसे ज्यादा उलटफेर नागालैंड में

दल-बदल के मामले 17 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में दर्ज किए गए। नागालैंड सबसे ऊपर रहा, जहां 32 जनप्रतिनिधियों ने पार्टी बदली। इसके बाद पश्चिम बंगाल में 20, तेलंगाना में 9, गोवा और पंजाब में 8-8, महाराष्ट्र और मेघालय में 6-6 तथा मणिपुर में 5 मामले सामने आए। दिलचस्प बात यह है कि अकेले नागालैंड और पश्चिम बंगाल ही कुल दल-बदल मामलों के लगभग 47 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार रहे।

भारतीय लोकतंत्र के लिए चिंता का विषय

रिपोर्ट देने वाली संस्था एडीआर कहना है कि दल-बदल का बढ़ता चलन भारतीय लोकतंत्र के लिए चिंता का विषय है। संगठन का तर्क है कि कई बार जनता जिस पार्टी को सत्ता या विपक्ष में देखना चाहती है, चुनाव बाद के राजनीतिक समीकरण उस फैसले को बदल देते हैं। रिपोर्ट में मूल्य आधारित राजनीति की कमी, सत्ता और पद का आकर्षण, कमजोर दल-बदल कानून, राजनीतिक अवसरवाद और अयोग्यता मामलों में देरी को इसके प्रमुख कारणों में गिना गया है। संगठन ने 10वीं अनुसूची यानी दल-बदल कानून को और मजबूत बनाने की मांग की है। साथ ही सुझाव दिया है कि दल-बदल से जुड़े मामलों का समयबद्ध निपटारा हो, दोषी पाए जाने वाले प्रतिनिधियों को तुरंत सार्वजनिक पदों से रोका जाए और राजनीतिक दलों के भीतर आंतरिक लोकतंत्र मजबूत किया जाए।

सिर्फ नेता नहीं बदले, कई राज्यों का गणित भी बदला

रिपोर्ट में कहा है कि हाल के वर्षों में कुछ राज्यों में सरकारों के गिरने या राजनीतिक स्थिति बदलने के पीछे विधायकों का दल-बदल अहम कारण रहा। नागालैंड में सबसे ज्यादा 32 जनप्रतिनिधियों ने पाला बदला, जिससे वहां राजनीतिक ताकतों का नया संतुलन बना। पश्चिम बंगाल में 20 सांसदों के टीएमसी छोड़ने से विपक्षी राजनीति की दिशा बदल गई। तेलंगाना में बीआरएस के 9 विधायक कांग्रेस में चले गए, जिससे विधानसभा में बीआरएस की ताकत कमजोर हुई और कांग्रेस की स्थिति मजबूत हुई। गोवा में कांग्रेस के 8 विधायक बीजेपी में शामिल हो गए। मणिपुर में जदयू के 5 विधायक बीजेपी के साथ चले गए, जबकि महाराष्ट्र में शिवसेना (यूबीटी) के 6 सांसद शिंदे गुट की शिवसेना में पहुंच गए। रिपोर्ट का निष्कर्ष है कि कई राज्यों में मतदाताओं ने जो राजनीतिक तस्वीर चुनाव में बनाई थी, दल-बदल ने उसे बाद में बदल दिया।

एनडीपीपी को सबसे बड़ा झटका लगा

रिपोर्ट के मुताबिक सबसे ज्यादा नुकसान एनडीपीपी को हुआ। इस पार्टी के 25 निर्वाचित प्रतिनिधियों ने पार्टी छोड़ी, जो कुल दल-बदल का 23 प्रतिशत है। इसके बाद एआईटीसीके 20 और आईएनसी के 19 नेता पार्टी छोड़कर चले गए । इसके अलावा बीआरएस के 9, आप और एनसीपी के 7-7, शिवसेना (यूबीटी) के 6, जदयू के 5 और एनपीपी के 4 जनप्रतिनिधियों ने भी अपनी पार्टी बदली। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि एनडीपीपी, एआईटीसी और कांग्रेस से आने वाले नेताओं की संख्या 64 रही, जो कुल दल-बदल मामलों का 58 प्रतिशत है।

111 जनप्रतिनिधियों ने बदला पाला, सबसे ज्यादा विधायक

रिपोर्ट के अनुसार कुल 111 सांसद और विधायक दल-बदल करने वालों की सूची में शामिल हैं। इनमें 26 लोकसभा सांसद, 7 राज्यसभा सांसद और 78 विधायक हैं। रिपोर्ट 2022 से 2026 के बीच हुए चुनावों और इस दौरान हुए उपचुनावों के आधार पर तैयार की गई है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि 78 विधायकों में से 70 ने चुनाव जीतने के बाद सीधे पार्टी बदली, जबकि 8 नेताओं ने इस्तीफा या अयोग्यता जैसी प्रक्रियाओं के बाद उपचुनाव लड़कर दोबारा जीत हासिल की।

एनपीएफ, बीजेपी को सबसे ज्यादा फायदा मिला

पार्टी बदलने वाले नेताओं की पहली पसंद एनपीएफ रही। इस पार्टी में 32 नेता शामिल हुए। इसके बाद बीजेपी में 29 और नेशनलिस्ट सिटीजन पार्टी आफ इंडियामें 20 नेता पहुंचे। कांग्रेस को 9, शिवसेना को 8, एनपीपी को 6 और एनपीएफ को 4 नेता मिले। रिपोर्ट बताती है कि एनपीएफ, बीजेपी और

नेशनलिस्ट सिटीजन पार्टी आफ इंडिया ने मिलकर 111 में से 81 नेताओं को अपने पाले में किया यह कुल दल-बदल का 73 प्रतिशत है।

बीजेपी ने बंगाल चुनाव में खर्च किए 286.99 करोड़

निर्वाचन आयोग को सौंपे गए आंकड़ों के अनुसार भारतीय जनता पार्टी ने पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में 286.99 करोड़ रुपये खर्च किए। यह राशि इस साल हुए पांच राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में कांग्रेस के कुल चुनावी व्यय 248.55 करोड़ रुपये से ज्यादा है। भाजपा ने अपने कुल पांच राज्यों के खर्च का आधा से अधिक हिस्सा अकेले बंगाल में लगाया। भारतीय जनता पार्टी ने अकेले पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में 286.99 करोड़ रुपये खर्च किए, जो इस साल की शुरुआत में हुए चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश के चुनावों में कांग्रेस के कुल 248.55 करोड़ रुपये के खर्च से अधिक है। निर्वाचन आयोग को सौंपे गए खर्च संबंधी विवरण में इसकी जानकारी मिली है। पांच राज्यों (असम, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और पुडुचेरी) के चुनावों में भाजपा के

» पांच राज्यों में कांग्रेस के कुल व्यय से भी अधिक

कुल 529.38 करोड़ रुपये के खर्च में आधे से अधिक हिस्सा पश्चिम बंगाल का रहा। पार्टी ने बंगाल में सामान्य प्रचार पर 217.16 करोड़ रुपये और उम्मीदवारों पर 69.83 करोड़ रुपये खर्च किए। भाजपा ने पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) को सत्ता से हटाकर पहली बार सरकार बनाई। घोषित किए गए 293 सीटों के परिणामों में भाजपा ने 207 सीटें जीतीं, जबकि टीएमसी को 80 सीटें मिलीं। कांग्रेस ने राज्य में हाशिये की ताकत होने के बावजूद 293 सीटों पर स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ा और दो सीटें जीतीं। पार्टी ने बताया कि उसने अपने केंद्रीय मुख्यालय और राज्य इकाई के माध्यम से बंगाल में 42.08 करोड़ रुपये खर्च किए। इसमें 12.96 करोड़ रुपये सामान्य प्रचार और 29.12 करोड़ रुपये उम्मीदवारों तथा उनसे जुड़े खर्चों पर व्यय किए गए। प्रदेश में 2011 में सत्ता गंवाने से पहले कई दशकों तक बंगाल पर शासन करने वाली माकपा ने 197 सीटों पर चुनाव लड़ा और एक सीट जीती। उसकी राज्य इकाई ने उम्मीदवारों पर किए गए खर्च समेत कुल 8.23 करोड़ रुपये के व्यय की जानकारी दी। बंगाल में भाजपा की मुख्य प्रतिद्वंद्वी रही तृणमूल कांग्रेस का खर्च विवरण अभी सार्वजनिक नहीं किया गया है। पार्टियों द्वारा घोषित खर्च के आधार पर केरल की स्थिति अलग रही। यहां कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन ने माकपा के नेतृत्व वाले वाम लोकतांत्रिक मोर्चे को सत्ता से हटाया। कांग्रेस ने 63 सीटें और माकपा ने 26 सीटें जीतीं। भाजपा को तीन सीटें मिलीं। कांग्रेस ने केरल में अपने मुख्यालय और राज्य इकाई के माध्यम से 105.34 करोड़ रुपये खर्च किए, जो भाजपा के 82.67 करोड़ रुपये से अधिक है। कांग्रेस के खर्च में 71.30 करोड़ रुपये सामान्य प्रचार और 34.05 करोड़ रुपये उम्मीदवारों तथा उनसे जुड़े व्यय शामिल हैं। भाजपा ने केरल में सामान्य प्रचार पर 54.93 करोड़ रुपये और उम्मीदवारों पर 27.74 करोड़ रुपये खर्च किए। केरल में प्रमुख राजनीतिक दल माकपा की राज्य इकाई ने 28.60 करोड़ रुपये खर्च करने की जानकारी दी। इसमें 26.30 करोड़ रुपये सामान्य प्रचार और 2.31 करोड़ रुपये उम्मीदवारों पर खर्च किए गए। पांचों चुनावों में कांग्रेस ने प्रचार पर 143 करोड़ रुपये और उम्मीदवारों पर 105.55 करोड़ रुपये खर्च किए, जिससे उसका कुल खर्च 248.55 करोड़ रुपये रहा। माकपा का कुल संयुक्त खर्च 39.04 करोड़ रुपये रहा। भाजपा ने बंगाल और केरल के अलावा असम में 96.27 करोड़ रुपये, तमिलनाडु में 51.56 करोड़ रुपये और पुडुचेरी में 11.90 करोड़ रुपये खर्च किए। इससे पहले दाखिल किए गए विवरणों के अनुसार, चुनाव अवधि के दौरान भाजपा के केंद्रीय मुख्यालय को 1,472.8 करोड़ रुपये मिले, जबकि कांग्रेस ने अपने मुख्यालय और पांच राज्य इकाइयों में कुल 207.17 करोड़ रुपये की प्राप्तियां दर्ज कीं। चुनाव अवधि समाप्त होने पर भाजपा के केंद्रीय कार्यालय में 7,627.2 करोड़ रुपये की राशि थी, जो चुनावों की घोषणा के समय 6,722.6 करोड़ रुपये थी। इसी अवधि में कांग्रेस के मुख्यालय और पांच राज्य इकाइयों की संयुक्त शेष राशि करीब 169.06 करोड़ रुपये से घटकर 103.2 करोड़ रुपये रह गई।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

दवाओं की कीमतों पर कसे शिकंजा

बीमारी इंसान को केवल शारीरिक रूप से नहीं तोड़ती, बल्कि इलाज का खर्च कई परिवारों की आर्थिक कमर भी तोड़ देता है। ऐसे समय में जब कोई परिवार कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहा हो, तब जीवन बचाने वाली दवा की कीमत में दस गुना तक का अंतर सामने आए तो सवाल सिर्फ महंगी दवा का नहीं रह जाता, बल्कि पूरी व्यवस्था की जवाबदेही का बन जाता है।

पूरे देश सरकार दावा करती है स्वास्थ्य सेवाएं चुसज दुरूस्त हैं। पर आय दिन अखबारों में अस्पतालों व डॉक्टरों की ज्यादती की खबरें आती रहती है। कभी कभी गलत इलाज कर दिया जाता है और भारी भरकम बिल भी ले लिया जाता है। बीमारी इंसान को केवल शारीरिक रूप से नहीं तोड़ती, बल्कि इलाज का खर्च कई परिवारों की आर्थिक कमर भी तोड़ देता है। ऐसे समय में जब कोई परिवार कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहा हो, तब जीवन बचाने वाली दवा की कीमत में दस गुना तक का अंतर सामने आए तो सवाल सिर्फ महंगी दवा का नहीं रह जाता, बल्कि पूरी व्यवस्था की जवाबदेही का बन जाता है। हम आपको बता दें कि सर्वोच्च न्यायालय ने दवाओं की कीमतों में इसी भयावह अंतर पर गंभीर चिंता जताते हुए ऐसे सवाल उठाए हैं, जिनका जवाब सरकार, दवा कंपनियों, नियामक संस्थाओं और अस्पतालों, सभी को देना होगा।

मामला उस समय बेहद गंभीर हो गया जब अदालत के सामने बताया गया कि कैंसर की एक आवश्यक दवा खुदरा विक्रेताओं को करीब 2,700 रुपये में उपलब्ध कराई जाती है, लेकिन उसी दवा पर 27,000 रुपये का अधिकतम खुदरा मूल्य अंकित है। यानी खुदरा मूल्य उस कीमत का लगभग दस गुना है जिस पर दवा खुदरा विक्रेता तक पहुंच रही है। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने इस अंतर पर कड़ा सवाल उठाते हुए पूछा कि आखिर किसी मरीज से इतनी बड़ी रकम क्यों वसूली जानी चाहिए और जिन अधिकारियों को ऐसी व्यवस्था पर निगरानी रखनी चाहिए, वे चुप क्यों हैं। देखा जाये तो यहां से सवालों की पूरी श्रृंखला शुरू होती है। अगर दवा की वास्तविक आपूर्ति कीमत और मरीज से वसूले जाने वाले मूल्य के बीच इतना बड़ा अंतर हो सकता है, तो मूल्य-निर्धारण की निगरानी कौन कर रहा है? अगर नियामक संस्थाएं मौजूद हैं, तो ऐसी कीमतें बाजार में पहुंचती कैसे हैं? और अगर नियम हैं, तो उनका पालन कराने की जिम्मेदारी किसकी है? सर्वोच्च न्यायालय ने इस अंतर को लेकर बेहद कठोर भाषा का इस्तेमाल किया और इसे मरीजों के साथ 'दिनदहाड़े डकैती' तथा 'वसूली' जैसे शब्दों से जोड़ा। अदालत ने यह भी सवाल उठाया कि जब जीवनरक्षक दवा की कीमत इतनी अधिक हो जाती है तो मजबूर मरीज क्या करे? अदालत के समक्ष यह बात भी रखी गई कि इलाज के लिए परिवारों को मकान और गहने तक बेचने पड़ते हैं। यही इस पूरे मामले का सबसे दर्दनाक पहलू है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

राजनीति में वार-प्रतिवार का अस्त्र न बने मिमिक्री

विश्वनाथ सचदेव

राजनीति की दुनिया की एक विवशता या विशेषता यह है कि उसमें किसी को अपना कहा-किया कभी गलत नहीं लगता, और यदि यही सब विरोधी करे तो वह कभी सही नहीं माना जाता। इसका ताजा उदाहरण हाल ही में इंदौर में दिखा जब लोकसभा में विपक्ष के नेता द्वारा चलाये जा रहे अभियान 'छात्रों की गूंज' में एक मसखरे को मंच पर बुलाया गया। मसखरा शब्द में कुछ हल्कापन सुनाई देता है, शायद इसीलिए आज की पीढ़ी इसे अंग्रेज़ी में 'स्टेण्ड अप कॉमेडियन' कहना पसंद करती है। नेता विपक्ष के उस कार्यक्रम में पता नहीं क्या सोचकर एक कामेडियन को सम्मिलित करना जरूरी समझा गया था, पर जो हुआ उसे देखकर अच्छा तो नहीं लगा। राजनेताओं की मिमिक्री अथवा नकल उतारना एक स्वाभाविक-सी बात मानी जाती है। इस मिमिक्री को देखने-सुनने वाले अक्सर इस पर हंस लेते हैं, और बात वहीं समाप्त हो जाती है। यह सही है कि राजनीति में मिमिक्री का उपयोग सिर्फ हंसने-हंसाने के लिए नहीं होता।

उद्देश्य अपने विरोधी को नीचा दिखाना ही होता है, इसलिए जिसका मजाक उड़ाया जाता है, वह, और उसके समर्थक उसे सही नहीं मानते और मजाक उड़ाने वालों को वह कभी गलत नहीं लगता। इसीलिए जब इंदौर में राहुल गांधी की सभा में एक मसखरे को मंच पर बुलाकर प्रधानमंत्री की मिमिक्री करायी गयी तो इसे पसंद-नापसंद करने वाले साफ-साफ बंटे हुए दिखाई दे रहे हैं। होना तो यह चाहिए था कि मिमिक्री के इस प्रकरण को हंस कर भुला दिया जाता, पर मामला राजनीतिक नफे-नुकसान का है, इसलिए बात बढ़ गयी है। भाजपा वालों को यह लग रहा है कि प्रधानमंत्री की छवि को खराब करने के लिए विपक्ष ने यह 'घटिया' चाल चली है, और कांग्रेस के समर्थक इसे अपना 'मास्टर स्ट्रोक' मान रहे हैं। हकीकत यह भी है कि दोनों पक्षों में एक होड़-सी लगी है एक-दूसरे को नीचा दिखाने की। राजनीति की दृष्टि से इस मिमिक्री-प्रकरण का भले ही कुछ भी अर्थ हो, पर इसका एक सीधा-सा अर्थ यह भी है कि मिमिक्री ने हमारी राजनीति को एक घटियापन से जोड़ दिया है।

वैसे भी राजनीति को 'शैतानों की अंतिम शरणस्थली' कहा गया है, पर राजनीतिक विरोधियों पर इस तरह के घटिया प्रहार हमारी राजनीति के ओछेपन को ही उजागर करते हैं। एक-दूसरे का मजाक उड़ाना हमेशा गलत नहीं होता, पर जिस तरह के वार-प्रतिवार हमारी राजनीति में दिखने लगे हैं, उनके घटियापन को किसी भी तरह

के बचाव से छिपाया नहीं जा सकता। इस संदर्भ में हमारे छुटभैया राजनेताओं से लेकर बड़े से बड़े राजनेता का दामन भी मैला दिखाई देता है। इंदौर के 'छात्रों की गूंज' के कार्यक्रम में मसखरे को मंच पर बुलाकर इस मैलेपन को ही उजागर किया गया है। बहरहाल, राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी का यह 'छात्रों की गूंज' वाला अभियान अभी जड़ें पकड़ता नज़र आ रहा है। इंदौर का यह कार्यक्रम पांचवां था। भाजपा वाले भले ही इसे 'झूठ की गूंज' कहकर इसका महत्व कम करने की कोशिश करते दिखाई दें, पर जिस तरह युवा इस कार्यक्रम से जुड़ रहे हैं, वह यह अवश्य बताता है कि हमारी जेन-जी वाली पीढ़ी इस अभियान में अपनी आवाज़ खोज रही है। देश का आज का युवा हमारी राजनीति को आकार देने में अपनी सक्रिय और सार्थक भूमिका खोज ही नहीं रहा, निभा भी रहा है। यह एक गंभीर प्रयास है और कांग्रेस पार्टी को उसे इसी रूप में देखना-समझना चाहिए। मिमिक्री जैसी कोशिशें तालियां तो बजवा सकती हैं, जैसा कि इंदौर वाले कार्यक्रम में हुआ, पर यह बात अपने आप में कम महत्वपूर्ण नहीं है कि इसी मिमिक्री के चलते वह सब कहीं खो गया जो राहुल गांधी ने कहा, अथवा कहना चाह रहे थे। सवाल सिर्फ एक राहुल गांधी का नहीं है, जब भी जिस नेता ने ऐसी कोशिश की है, उसे तालियां तो मिली हैं, कभी-कभी लोगों ने ऐसी बातों को याद भी रखा है, पर अपनी बात श्रोताओं तक पहुंचाने का नेता का प्रयास कहीं न कहीं असफल ही हुआ है। राहुल गांधी इस गूंज वाले कार्यक्रम में बहुत गंभीरता के साथ युवाओं से जुड़े मुद्दे उठा रहे हैं। शिक्षा, बेरोज़गारी जैसे गंभीर विषयों के माध्यम से वे देश की युवा-शक्ति को अपने साथ जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। इस अभियान के अब तक के परिणाम बता रहे हैं कि युवा इन प्रयासों में अपने सुखद भविष्य की आहट सुन रहे हैं। ऐसे में यदि विरोधियों की मिमिक्री से युवाओं का ध्यान बंटता है तो यह एक चिंतनीय विषय होना चाहिए। विदेशी नेताओं से प्रधानमंत्री कैसे मिलते हैं, यह हल्के-फुल्के मज़ाक का विषय तो हो सकता है, पर यदि कोई इसके सहारे राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश करता है तो उसे नासमझी ही कहा जायेगा। फिर, यह भी नहीं भुलाया जाना चाहिए कि भाजपा का नेतृत्व, हमारे प्रधानमंत्रीजी भी, ऐसी नासमझियों का लाभ उठाना अच्छी तरह जानते हैं।

संवाद के जरिए कड़वाहट कम करने की कवायद

के.एस. तोमर

आज जब चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ज्वाइंट बेस एंड्रयूज पहुंचेंगे, तब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप स्वयं हवाई पट्टी पर उनका स्वागत कर सकते हैं। यह इसलिए भी अहम है कि मई में बीजिंग पहुंचने पर ट्रंप की अगवानी शी ने स्वयं नहीं की थी। ऐसे में एंड्रयूज पर ट्रंप की ओर से व्यक्तिगत स्वागत महज औपचारिकता नहीं, बल्कि एक कूटनीतिक संकेत होगा। अमेरिका और चीन रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी हैं, लेकिन दोनों नेता यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि यह प्रतिस्पर्धा अनियंत्रित टकराव में न बदले। 24 सितंबर की बैठक में व्यापार, तकनीक और वैश्विक संघर्षों से जुड़े कठिन मुद्दों पर बातचीत होगी। लगभग चार वर्ष बाद दोनों नेता ऐसे समय में मिल रहे हैं, जब व्यापार शुल्क, दुर्लभ खनिज, एआई, ताइवान, तथा यूक्रेन और ईरान जैसे संघर्ष एक-दूसरे से जुड़ चुके हैं।

यह मुलाकात रणनीतिक प्रतिस्पर्धा को संवाद के जरिए नियंत्रित करने की परीक्षा भी है। भारत के लिए यह शिखर बैठक विशेष महत्व रखती है। नई दिल्ली वाशिंगटन, मॉस्को और बीजिंग के साथ संतुलन बनाए हुए है। ट्रंप व शी के बीच किसी भी समझ से भारत की रणनीतिक स्थिति सीधे नहीं बदलेगी, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय माहौल प्रभावित हो सकता है। ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में व्यक्तिगत कूटनीति का महत्व बढ़ा है। उन्होंने लंबे संघर्षों में अमेरिकी भागीदारी कम करने की बात कही थी, लेकिन ईरान और यूक्रेन के मोर्चे अभी समाप्त नहीं हुए। इस परिस्थिति ने उन्हें सक्रिय बातचीत और समझौतों की ओर बढ़ाया है। ट्रंप का तरीका लेन-देन पर आधारित है। टैरिफ बातचीत का हथियार हैं, प्रतिबंध दबाव का साधन और आर्थिक संबंध रणनीतिक सौदेबाजी का हिस्सा। चीन इस नीति की सबसे बड़ी परीक्षा है, क्योंकि वह व्यापारिक शक्ति होने के साथ तकनीकी व सैन्य प्रतिद्वंद्वी तथा रूस और ईरान का महत्वपूर्ण साझेदार भी है। चीन के साथ हर मोर्चे पर अनिश्चितकालीन टकराव अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लिए भी महंगा पड़ सकता है। नवंबर की व्यापार समय-सीमा करीब है और दुर्लभ खनिजों तथा तकनीकी प्रतिबंधों पर तनाव है।

संबंधों के कुछ हिस्सों को स्थिर करने से ट्रंप को अन्य संकटों पर ध्यान केंद्रित करने की गुंजाइश मिल सकती है। वैसे बैठक का तत्काल मुद्दा व्यापार रहेगा। अमेरिका चीनी बाजार में अपने सामान के लिए अधिक पहुंच चाहता है, जबकि बीजिंग को अमेरिकी शुल्क व तकनीकी प्रतिबंधों में अधिक निश्चितता चाहिए। इसलिए दोनों पक्ष मौजूदा व्यापार संघर्ष-विराम को नवंबर के बाद भी बढ़ाने पर विचार कर सकते हैं। इनके प्रसंस्करण में चीन की प्रमुख स्थिति इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, रक्षा और एआई जैसे क्षेत्रों को प्रभावित करती है। अमेरिका विश्वसनीय आपूर्ति चाहता है, जबकि चीन को उन्नत तकनीक पर अमेरिकी प्रतिबंधों में ढील चाहिए। अमेरिका ने चीनी कंपनियों पर अत्याधुनिक एआई तकनीक से संबंधित जानकारी हासिल करने के आरोप लगाए हैं, वहीं बीजिंग ने ये आरोप खारिज किये। अब एआई मॉडल, उन्नत सेमीकंडक्टर, कंप्यूटिंग क्षमता और आंकड़ों को राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ा जा रहा है। शिखर बैठक में शुल्क में बदलाव जल्दी हो सकता है, लेकिन तकनीकी बढ़त आने वाले दशकों तक आर्थिक और सैन्य शक्ति को प्रभावित कर सकती है।

वहीं, ताइवान वह मुद्दा है, जिसमें व्यापक समझ की संभावना सबसे कठिन हो सकती है। बीजिंग चाहता है कि वाशिंगटन ताइवान की आजादी का स्पष्ट विरोध करे, जबकि अमेरिका के सहयोगी यह देखेंगे कि क्या सुरक्षा प्रतिबद्धताएं आर्थिक सौदेबाजी का हिस्सा बन रही हैं। इस समय चीन के लिए ताइवान संप्रभुता का मूल प्रश्न है, तो अमेरिका के लिए यह हिंद-प्रशांत रणनीति और क्षेत्रीय सहयोगियों से जुड़ा है। इसलिए ट्रंप और शी यदि टकराव से बच जाएं, तो उनके बयानों का पूरे एशिया में बारीक विश्लेषण होगा। जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया और ताइवान खासतौर पर वाशिंगटन की सुरक्षा प्रतिबद्धताओं पर नजर रखेंगे। अमेरिका-चीन संवाद क्षेत्रीय तनाव को कम कर सकता है। यदि किसी समझौते को अमेरिकी प्रतिरोध क्षमता को कमजोर करने वाला माना गया, तो सहयोगी देशों में नई चिंताएं पैदा हो सकती हैं। यूरोप भी इस बैठक पर कड़ी नजर रखेगा, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि अमेरिका चीन के साथ ऐसा कोई बड़ा समझौता न करे, जिसका यूरोप की सुरक्षा और अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

ईरान और यूक्रेन भी बातचीत से पूरी तरह बाहर नहीं रहेंगे। चीन के ईरान के साथ महत्वपूर्ण आर्थिक संबंध हैं, और रूस के साथ मजबूत रिश्ते हैं। वाशिंगटन चाहता है कि बीजिंग इन संबंधों का इस्तेमाल तेहरान और मॉस्को पर प्रभाव डालने के लिए करे, लेकिन चीन के अपने आर्थिक और रणनीतिक हित भी हैं। ट्रंप और शी की बैठक का सबसे बड़ा महत्व शायद किसी एक समझौते में नहीं, बल्कि इस बात में होगा कि दोनों देश अपनी प्रतिद्वंद्विता को किस सीमा तक नियंत्रित कर पाते हैं। फिर भी संवाद का महत्व कम नहीं है। अमेरिका और चीन दोनों जानते हैं कि हर मोर्चे पर खुला टकराव उनके हित में नहीं है। इस बैठक का आकलन इस आधार पर होगा कि वे किन मुद्दों को अनसुलझा छोड़ते हैं। आज की विभाजित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में प्रतिद्वंद्विता को खुले टकराव में बदलने से रोक पाना भी एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक लक्ष्य है।

नियमित स्वास्थ्य जांच जरूरी

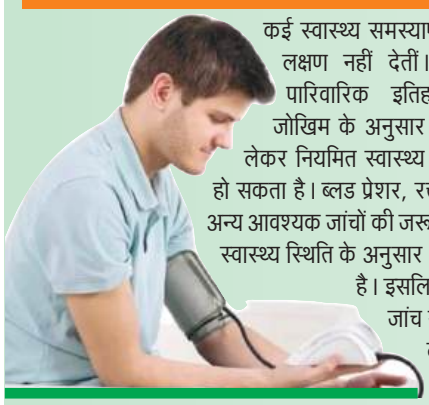

कई स्वास्थ्य समस्याएं शुरुआती दौर में स्पष्ट लक्षण नहीं देतीं। इसी वजह से उम्र, पारिवारिक इतिहास और व्यक्तिगत जोखिम के अनुसार चिकित्सक से सलाह लेकर नियमित स्वास्थ्य जांच कराना उपयोगी हो सकता है। ब्लड प्रेशर, रक्त शर्करा, वजन और अन्य आवश्यक जांचों की जरूरत व्यक्ति की उम्र और स्वास्थ्य स्थिति के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। इसलिए किसी दूसरे व्यक्ति की जांच या दवा को अपनी स्थिति पर लागू करने के बजाय डॉक्टर की सलाह लेना ज्यादा सुरक्षित है।

तनाव से रहें दूर

आज तनाव सिर्फ नौकरी करने वालों की समस्या नहीं है। कारोबार, पढ़ाई, पारिवारिक जिम्मेदारियां और आर्थिक चिंताएं भी मानसिक दबाव बढ़ा सकती हैं। लगातार तनाव महसूस होने पर व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में आराम, मनोरंजन, शारीरिक गतिविधि और परिवार या मित्रों के साथ संवाद के लिए समय निकालना चाहिए। यदि तनाव, बेचैनी, उदासी या नींद से जुड़ी समस्या लंबे समय तक बनी रहे और रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित करने लगे, तो विशेषज्ञ से सलाह लेने में संकोच नहीं करना चाहिए।

अच्छी नींद लें

भागदौड़ वाली जिंदगी में नींद अक्सर सबसे पहले प्रभावित होती है। देर रात तक मोबाइल चलाना, लगातार काम करना और अनियमित सोने-जागने का समय नींद की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। पर्याप्त और नियमित नींद शरीर तथा मस्तिष्क के लिए जरूरी है। सोने से पहले स्क्रीन टाइम कम करना, नियमित समय पर सोने की कोशिश करना और शांत वातावरण बनाना अच्छी नींद की दिशा में उपयोगी कदम हो सकते हैं। अगर लंबे समय तक नींद की समस्या बनी रहती है, तो चिकित्सकीय सलाह लेना उचित है।

बदलती जीवनशैली में बीमारी से पहले बचाव जरूरी

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में सबसे बड़ी चुनौती सिर्फ लंबी उम्र नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन जीना है। काम का बढ़ता दबाव, अनियमित दिनचर्या, कम शारीरिक गतिविधि, लंबे समय तक मोबाइल और कंप्यूटर का इस्तेमाल, असंतुलित खान-पान और पर्याप्त नींद की कमी धीरे-धीरे शरीर पर असर डाल रही है। कई बार शरीर में होने वाले बदलावों को लोग सामान्य थकान समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, जबकि यही छोटी-छोटी समस्याएं आगे चलकर गंभीर स्वास्थ्य परेशानी का कारण बन सकती हैं। विशेषज्ञों के अनुसार स्वस्थ रहने का सबसे प्रभावी तरीका बीमारी का इंतजार करना नहीं, बल्कि शुरुआत से ही अपनी जीवनशैली पर ध्यान देना है।

रोज करें एक्सरसाइज

स्वस्थ रहने के लिए जिम जाना ही जरूरी नहीं है। नियमित पैदल चलना, सीढ़ियों का इस्तेमाल करना, हल्की एक्सरसाइज, योग या अपनी क्षमता के अनुसार कोई शारीरिक गतिविधि दिनचर्या का हिस्सा बनाई जा सकती है। लंबे समय तक लगातार बैठे रहने की आदत को बीच-बीच में छोटे ब्रेक लेकर तोड़ा जा सकता है। शरीर जितना सक्रिय रहेगा, रोजमर्रा के काम करने की क्षमता और फिटनेस बनाए रखना उतना आसान होगा। बता दें स्वास्थ्य की जिम्मेदारी रोजमर्रा के छोटे फैसलों से शुरू होती है। आज की व्यस्त जिंदगी में अपने स्वास्थ्य के लिए समय निकालना विलासिता नहीं, आवश्यकता है। क्योंकि बीमारी के इलाज पर खर्च करने से बेहतर है कि स्वास्थ्य की देखभाल को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाए।

खान-पान पर दें ध्यान

स्वस्थ शरीर के लिए संतुलित आहार बेहद जरूरी है। भोजन में हरी सब्जियां, मौसमी फल, दालें, साबुत अनाज, पर्याप्त प्रोटीन और आवश्यक मात्रा में स्वस्थ वसा को शामिल किया जाना चाहिए। अत्यधिक नमक, चीनी, तला-भुना और अत्यधिक प्रसंस्कृत भोजन का सेवन सीमित करना बेहतर है। आजकल बाहर का खाना और पैकेज्ड फूड हमारी दिनचर्या का हिस्सा बनता जा रहा है। सुविधा के लिए लिया गया यह भोजन यदि नियमित आदत बन जाए तो वजन, रक्तचाप और मेटाबॉलिक स्वास्थ्य जैसी समस्याओं का जोखिम बढ़ सकता है। इसलिए जरूरी है कि स्वाद के साथ-साथ भोजन की गुणवत्ता पर भी ध्यान दिया जाए। इसलिए लगातार थकान, अचानक वजन में बदलाव, लंबे समय तक दर्द, सांस लेने में परेशानी, लगातार सिरदर्द, चक्कर, असामान्य रक्तस्राव या शरीर में किसी नए और लगातार बने रहने वाले बदलाव को सामान्य मानकर टालना उचित नहीं है।

मनीष कुमार मौर्य

हंसना मना है

मास्टर जी- बताओ शून्य की खोज किसने की थी... गप्पू- आलिया भट्ट, गप्पू गुस्से में मुझसे मजाक करते हो... तभी एक लड़का बोला...सर वो तोतला है आर्यभट्ट कह रहा है...

लड़की- मैं तुम्हारे लिए आग पर भी चल सकती हूं, नदी में कूद सकती हूं। लड़का- लव यू जानूं, क्या तुम मुझसे अभी मिलने आ सकती हो, लड़की- पागल हो क्या इतनी धूप में कैसे आ सकती हूं। लड़की की बात सुनकर लड़के के तो होश ही उड़ गए।

पति- शादी के समय सात फेरे लेते वक्त तुमने वचन दिया था और स्वीकार किया था कि मेरी इज्जत करोगी, मेरी सब बात मानोगी। पत्नी- तो क्या इतने लोगों के सामने तुमसे बहस करती। पतिदेव बेहोश।

हमको यु पागल बनाना छोड़ दो, बेवजह हर बात पे सताना छोड़ दो, तुम्हारी खुशबू अलग ही होती है मेरे दोस्त, बर्तन वाले साबुन से नहाना छोड़ दो।

साली- जीजा अगले जन्म में क्या बनोगे? जीजा- जी छिपकली बनूंगा। साली- वो क्यों? जीजा- क्योंकि आपकी बहन सिर्फ छिपकली से ही डरती है।

कहानी | घमंड कभी न करना

स्वामी विवेकानंद अपने लोकप्रिय शिकागो धर्म सम्मेलन के भाषण के बाद भारत वापस आ गये थे। अब उनकी चर्चा विश्व के हर देश में हो रही थी। स्वामी जी भारत वापस आकर एक दिन घूमते घूमते एक नदी के किनारे आ गये। वहां उन्होंने देखा कि एक नाव किनारा छोड़ चुकी है। तब वे नाव के वापस आने के इंतजार में वहीं किनारे पर बैठ गए। साधु ने स्वामी जी को वहां अकेला बैठा देखा स्वामी जी से पूछा, तुम यहां क्यों बैठे हुए हो? स्वामी जी ने जवाब दिया, मैं यहां नाव का इंतजार कर रहा हूं। साधु ने पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? स्वामी जी ने कहा, मैं विवेकानंद हूं। साधु ने मजाक उड़ाते हुए कहा, अच्छा! तो तुम वो विख्यात विवेकानंद हो जिसको लगता है कि विदेश में जा कर भाषण दे देने से तुम बहुत बड़े महात्मा साधु बन सकते हो। फिर साधु ने बहुत ही घमंड के साथ, नदी के पानी के ऊपर चल कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। साधु ने स्वामी जी से कहा, क्या पानी पर पैदल चल कर इस नदी को पार कर सकते हो? स्वामी जी ने साधु से कहा, इस बात में कोई शक नहीं कि आपके पास बहुत ही अद्भुत शक्ति है। आपको यह असाधारण शक्ति प्राप्त करने में कितना समय लगा। बहुत ही अभिमान के साथ साधु ने जवाब दिया, यह बहुत ही कठिन कार्य था। मैंने बीस सालों की कठिन तपस्या और साधना के बाद यह महान शक्ति प्राप्त की है। साधु का यह बताने का अंदाज बहुत ही अहंकार भरा था। यह देख कर स्वामी जी बहुत ही शांत स्वर में बोले, आपने अपनी जिन्दगी के बीस साल ऐसी विद्या को सीखने में बर्बाद कर दिए, जो काम एक नाव पांच मिनट में कर सकती है। आप ये बीस साल निर्धन बेसहारा गरीबों की सेवा में लगा सकते थे। या अपने ज्ञान और शक्ति का प्रयोग देश और देशवासियों की प्रगति में लगा सकते थे। परंतु आपने अपने बीस साल सिर्फ पांच मिनट बचाने के लिए व्यर्थ कर दिए, ये कोई बुद्धिमानी नहीं है। साधु सिर झुकाए खड़े रह गये और स्वामी जी नाव में बैठ कर नदी के दूसरी किनारे चले गए।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष कार्यस्थल पर बिना बात के विवादों में न पड़ें। व्यापार में बड़ा पूंजी निवेश आज टाल देना ही बेहतर है। लव पार्टनर के साथ छोटी बात पर तनाव हो सकता है।

वृषभ करियर में तरक्की के नए रास्ते खुलेंगे। बिजनेस में बड़ा मुनाफा और नए सौदे मिलेंगे। परिवार और दोस्तों के साथ पार्टी का योग है। आय में जबरदस्त बढ़ोतरी होगी।

मिथुन दफ्तर में आपकी बुद्धिमत्ता और मेहनत की तारीफ होगी। ऑनलाइन या विदेशी व्यापार से बड़ा लाभ हो सकता है। वैवाहिक जीवन में प्रेम और सम्मान बढ़ेगा।

कर्क भाग्य का पूरा साथ मिलने से अटके काम पूरे होंगे। धार्मिक कार्यों या यात्रा में रुचि बढ़ेगी। कारोबारी हैं तो नए प्रोजेक्ट्स शुरू करने के लिए दिन अच्छा है।

सिंह कार्यस्थल की गुप्त बातें किसी से शेयर न करें, विरोधी सक्रिय हैं। व्यापार में जल्दबाजी या जोखिमभरे फैसलों से बचें। लव पार्टनर के साथ संयम से बात करें।

कन्या नौकरी-पेशा हैं तो सहकर्मियों के साथ बहुत अच्छा तालमेल रहेगा। कारोबारियों को नए ग्राहकों से जुड़ने का मौका और लाभ मिलेगा। लव लाइफ बेहद रोमांटिक रहेगी।

तुला दफ्तर में आपके काम का लोहा माना जाएगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी। व्यापार में पुरानी योजनाओं से अच्छा लाभ मिलेगा। पार्टनर के साथ गलतफहमियां खत्म होंगी।

वृश्चिक प्रॉपर्टी या रियल एस्टेट के काम में लाभ मिलेगा। व्यावसायिक मित्रों की सलाह से अटके काम पूरे होंगे। पारिवारिक माहौल खुशनुमा रहेगा। आय के साधन बनेंगे।

धनु दफ्तर में काम का दबाव अधिक रह सकता है। व्यापारिक फैसलों में वरिष्ठों की सलाह जरूर लें। घर-परिवार में किसी बात पर वैचारिक मतभेद हो सकता है।

मकर आपके पराक्रम और काम की चौतरफा तारीफ होगी। अटका हुआ पैसा वापस मिलने से व्यापार सुदृढ़ होगा। पारिवारिक जीवन में मधुरता रहेगी। ऊर्जावान महसूस करेंगे।

कुम्भ आपके आकर्षक स्वभाव से कार्यक्षेत्र में नए अवसर मिलेंगे। बिजनेस में नई तकनीक का इस्तेमाल फायदेमंद रहेगा। पार्टनर के साथ सुखद और यादगार पल बिताएंगे।

मीन नौकरी में खुद के बलबूते पर बड़ी सफलता हासिल करेंगे। कारोबारी हैं तो नए प्रोजेक्ट्स शुरू करने के लिए दिन अच्छा है। लव पार्टनर के साथ भावनात्मक जुड़ाव गहरा होगा।

द पैराडाइज में दिखा कयादू लोहार का ग्लैमरस अवतार

नानी की फिल्म द पैराडाइज जबरदस्त सुर्खियों में है। फिल्म 24 सितंबर को रिलीज हुई। पहले दिन कमाई के मामले में फिल्म रिकॉर्ड तोड़ रही है। फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर शानदार रिस्पॉन्स मिल रहा है। फिल्म में नानी के अलावा एक्ट्रेस कयादू लोहार भी नजर आई हैं। कयादू लोहार इस फिल्म से चर्चा में आ गई हैं। कयादू लोहार का फिल्म में बोल्ड रोल प्ले किया है। उनकी स्क्रीन प्रेजेंस और किरदार टॉक ऑफ द टाउन बना है। सोशल मीडिया पर कयादू के कई सीन वायरल हो रहा हैं। उनके सीन्स चर्चा में हैं। उनका ग्लैमरस लुक, नानी के साथ केमिस्ट्री और स्मोकिंग सीन वायरल है।

कयादू लोहार की बात करें तो उन्होंने 2021 में करियर की शुरुआत की थी। वो कन्नड़ फिल्म Mugilpete में नजर आई थीं। इसके बाद उन्होंने मलयालम, मराठी और तेलुगू फिल्मों में डेब्यू किया। वो अलूरी, आई प्रेम यू, ड्रैगन, फंकी, आई एम गेम जैसी फिल्मों में दिखीं। अब उनके हाथ में कई फिल्में हैं। वो Thaaram, Manjanaththi और सूर्या 48 जैसी फिल्मों में दिखेंगी। कयादू लोहार 26 साल की हैं। उन्होंने जूलरी पेजेंट कॉन्टेस्ट से अपने करियर की शुरुआत की। फिल्म को सोशल मीडया पर मिक्स रिव्यूज मिल रहे हैं। फिल्म के पहले दिन बॉक्स ऑफिस पर धमाका करने की खबरें हैं। सैकनिल्क के मुताबिक, फिल्म को पहले दिन 7,552 शोज मिले। फिल्म ने रात 8 बजे तक 27.94 करोड़ का कलेक्शन कर लिया है। फिल्म ने 32.97 करोड़ का ग्रॉस कलेक्शन कर लिया है।

फिल्म ने हिंदी में 1.82 करोड़ कमाए। वहीं तमिल में 1.02 करोड़ का बिजनेस किया। तेलुगू में फिल्म ने 25.10 करोड़ कमाए। इसी के साथ फिल्म ने हिट 3 को पछाड़ दिया है। फिल्म ने ओपनिंग डे पर 21 करोड़ का कलेक्शन किया था। ये अभी तक नानी के करियर की हाइएस्ट ओपनर थी। हालांकि, अब द पैराडाइज ने इस फिल्म को पछाड़ दिया है। अब देखना होगा कि द पैराडाइज ओपनिंग वीकेंड पर कितना कलेक्शन करती है। फिल्म के ओटीटी राइट्स नेटफ्लिक्स ने खरीद लिए हैं। फिल्म को श्रीकांत ओडेला ने डायरेक्ट किया है। फिल्म का रन टाइम 2 घंटे 45 मिनट है।

फिर साथ आ रहे अहान पांडे और अनीत पड्डा, अगले महीने होगी शूटिंग

साल 2025 की हिट रोमांटिक फिल्म सैयारा से रातों-रात स्टार बने अहान पांडे और अनीत पड्डा की जोड़ी एक बार फिर साथ नजर आनेवाली है। मोहित सूरी अपनी अगली निर्देशित फिल्म के लिए दोनों नए कलाकारों को एक बार फिर साथ खींच लाए हैं। आदित्य चोपड़ा द्वारा प्रड्यूस इस प्रोजेक्ट की शूटिंग बहुत जल्द शुरू होने की उम्मीद है। इसी के साथ अहान और अनीत की इस फिल्म को साल 2027 में सिनेमाघरों में रिलीज करने की तैयारी हो रही है।

मोहित सूरी की ये नई फिल्म सैयारा का सीक्वल नहीं है

यहां ये भी कहा गया है कि मोहित सूरी की ये नई फिल्म सैयारा का सीक्वल नहीं है बल्कि ये एक नई और अलग तरह की फिल्म होगी। फिल्म सैयारासे अहान की बतौर लीड होरो एक्टिंग करियर की शुरुआत हुई ।

मोहित सूरी की फिल्म की शूटिंग अक्टूबर में शुरू होगी। वरायटी इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, सूरी की अगली निर्देशित फिल्म की शूटिंग अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में शुरू करने की प्लानिंग हो चुकी है। वहीं अहान पांडे और अनीत पड्डा की इस फिल्म को लेकर कहा जा रहा था कि मेकर्स इस फिल्म का नाम सतरंगा रखने पर विचार कर रहे हैं। हालांकि, फिल्म प्रड्यूसर्स की ओर से टाइटल को लेकर अभी तक कोई कन्फर्मेशन नहीं है।

रिपोर्ट के मुताबिक, हालांकि फिल्म का टाइटल टी-सीरीज के तहत रजिस्टर हो चुका है, लेकिन प्रोडक्शन ने अभी तक ऑफिशियली इसकी घोषणा नहीं किया है। इसलिए इस बात की जानकारी फिलहाल नहीं है कि फिल्म का नाम फाइनली सतरंगा ही है या कुछ और। इस प्रोजेक्ट की ऑफिशियल घोषणा अप्रैल में की गई थी, जिसमें स्टूडियो ने इसे एक बेहतरीन लव स्टोरी ही बताया था।

रहस्य, लोककथाओं और रोमांच के इर्द-गिर्द घूमती है तमन्ना भाटिया और सिद्धार्थ मल्होत्रा की फिल्म द वन

तमन्ना भाटिया और सिद्धार्थ मल्होत्रा की मच अवेटेड फिल्म द वन: फोर्स ऑफ द फॉरेस्ट सिनेमाघरों में दस्तक दे चुकी है। बिहार की लोककथा, रहस्यमयी जंगल, वन देवी का मंदिर और छठ की धूम को कहानी में पिरोती यह फिल्म हॉरर के साथ रोमांच का तड़का लगाने की कोशिश करती है। सातवीं शताब्दी से शुरू होने वाली कहानी जब साल 2026 में पहुंचती है, तो रहस्य और गहरा जाता है। लेकिन क्या फिल्म वाकई डराने में कामयाब होती है या हॉरर से ज्यादा रोमांच ही इसका सहारा बनता है? तमन्ना और सिद्धार्थ की जोड़ी, कहानी, VFX और निर्देशन कितना असर छोड़ते हैं? तमन्ना भाटिया और सिद्धार्थ मल्होत्रा की द वन की कहानी रहस्य, लोककथाओं और रोमांच के इर्द-गिर्द घूमती है। फिल्म की शुरुआत ही एक ऐसे रहस्यमयी जंगल से होती है, जहां सूरज ढलने के बाद कदम रखना मना है। कहानी में बिहार की मिट्टी, मंदिर और छठ का माहौल भी देखने को मिलता है, जो इसे आम हॉरर फिल्मों से थोड़ा अलग रंग देता है। हालांकि फिल्म डराने से ज्यादा दर्शकों में आगे क्या होगा वाली उत्सुकता पैदा करने की कोशिश करती है।

मुश्ताक खान के निधन पर राजपाल यादव का छलका दर्द

मुश्ताक खान अब हमारे बीच नहीं रहे। वेलकम, गदर, आशिकी, मुझसे शादी करोगी, स्त्री 2 जैसे फिल्मों में काम कर चुके मुश्ताक ने 75 की उम्र में अंतिम सांस ली। वो कैंसर से जंग हारे। सोशल मीडिया पर फैंस और सेलेब्स मुश्ताक के निधन पर शोक जता रहे हैं। कॉमडियन राजपाल यादव ने इंस्टा पर इमोशनल पोस्ट लिखकर मुश्ताक को याद किया है। गुरुवार को राजपाल यादव ने इंस्टाग्राम पर मुश्ताक खान की एक तस्वीर शेयर की। उनकी मौत पर दुख जाहिर करते हुए लिखा, आज दोपहर मैं मुश्ताक भाई से मिलने गया, उनसे बातें की, उन्होंने मुझे देखा, मुझसे हाथ भी मिलाया और हमारी सारी बातें वह सुन रहे थे और रिएक्ट भी कर रहे थे। मुझे तो अभी भी यकीन नहीं हो रहा कि दो घंटे पहले मैं जिनसे मिला, जिनसे हाथ मिलाया, वो अब हमारे बीच नहीं हैं। ऊपर वाले के फैसले के आगे हम सब नतमस्तक हैं। मुश्ताक भाई हमेशा एक लोकप्रिय इंसान और अभिनेता थे, है और रहेंगे। आपको बड़े दुखी दिल के साथ भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

फिल्म 'मॉन्स्टर' में सलमान खान और अरविंद स्वामी के बीच होगी सीधी टक्कर

सलमान खान की फिल्म मॉन्स्टर को लेकर फैंस में काफी एक्साइटमेंट है। ये सलमान की सबसे बड़ी अपकमिंग फिल्मों में से एक है। अब फिल्म के सेट से एक बड़ी अपडेट सामने आई है। फिल्म में सलमान खान और विलेन अरविंद स्वामी के बीच जबरदस्त एक्शन देखने को मिलेगा। दोनों इस वक्त मुंबई में इसी एक्शन सीन की शूटिंग कर रहे हैं। फिल्म से जुड़ी रिपोर्ट्स के मुताबिक अरविंद स्वामी 10 दिन के शेड्यूल के लिए मुंबई में हैं। इस पूरे शेड्यूल का पूरा फोकस एक्शन पर है। टीम कई दिनों से इस शेड्यूल की तैयारी कर रही थी। सीन्स की कोरियोग्राफी और एग्जीक्यूशन पर खास काम किया जा रहा है। हर एक्शन सीन को विजुअली दमदार बनाने के लिए अलग से प्लानिंग की गई है। ताकि थिएटर में ये सीन्स बड़ा इम्पैक्ट डालें।

इस शेड्यूल का सबसे अहम हिस्सा सलमान खान और अरविंद स्वामी का एक साथ शूट है। दोनों का साथ में 3 दिन का शूट रखा गया है। इसके बाद अरविंद अपने सोलो सीन्स शूट करेंगे। लेकिन मेन फोकस इन 3 दिनों पर है। क्योंकि इन्हीं 3 दिनों में दोनों के बीच की सीधी टक्कर वाले सीन्स शूट किए जा रहे हैं।

रिपोर्ट्स के अनुसार, फिल्म में दोनों का रिश्ता चूहे-बिल्ली जैसा होगा। दोनों एक-दूसरे का पीछा करते नजर आएंगे। एक तरफ सलमान का पावरफुल अंदाज होगा, तो दूसरी तरफ अरविंद स्वामी का दमदार विलेन वाला रोल देखने को मिलेगा। दोनों के बीच की टक्कर को दिखाने के लिए मेकर्स ने एक बड़ा ट्रेन एक्शन सीक्वेंस प्लान किया है। ये फिल्म का सबसे बड़ा एक्शन सीन बताया जा रहा है। इस सीक्वेंस को मुंबई में ही बड़े स्केल पर शूट किया जा रहा है। ट्रेन पर भागदौड़, हाथापाई और एक दूसरे को चेज करने वाले सीन देखने को मिलेंगे। मेकर्स इसे लार्जर-दैन-लाइफ बनाना चाहते हैं।

मॉन्स्टर को श्री वेंकटेश्वरा क्रिएशंस बना रहा है। डायरेक्टर वामशी पैडिपल्ली हैं। फिल्म में सलमान खान के साथ नयनतारा भी लीड रोल में हैं। पर मेन हाइलाइट सलमान और अरविंद के बीच का ये एक्शन ही है।

बताया जा रहा है कि सलमान इस फिल्म को लेकर काफी कॉन्फिडेंट हैं और सेट पर पूरी तरह डेडिकेटेड हैं। फिल्म को मेकर्स एक धुंआधार एक्शनर बनाने में लगे हैं और कोई कसर न छोड़ते हुए वे हर सीन पर उसी स्केल को ध्यान में रखकर काम कर रहे हैं।

चुनाव आयोग विवाद पर जारी है बवाल

» कांग्रेस बोली- बीजेपी के लिए काम कर रहे हैं ज्ञानेश कुमार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

संबंधित फाइलों को सार्वजनिक किया जाना चाहिए : चिदंबरम

पूरे विपक्ष का मुख्य चुनाव आयुक्त पर सवाल

नई दिल्ली। चुनाव आयोग विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। कांग्रेस का सीईसी के खिलाफ देशव्यापी प्रदर्शन के बाद पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री ने इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट पर भाजपा सरकार को घेरा है। उन्होंने कहा कि संबंधित फाइलों को सार्वजनिक किया जाना चाहिए। चिदंबरम ने कहा हमारा आरोप है कि मुख्य चुनाव आयुक्त बीजेपी के लिए काम कर रहे हैं। वह बीजेपी का प्रतिनिधित्व करते हैं। अगर चुनाव आयोग ने यह बयान जारी किया है कि सभी फैसले सर्वसम्मति से लिए गए थे, तो फाइलों को सार्वजनिक किया जाए। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी. चिदंबरम ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने पूरी तरह से असंवैधानिक और अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर फैसले लिए हैं और कहा कि उन्हें अपने पद से हट जाना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा जोशी ने कहा है कि एक साल से ज़्यादा समय से, मीटिंग से पहले कोई एजेंडा और मीटिंग के बाद कोई मिनट्स (कार्यवृत्त) सर्कुलेट नहीं किए गए। मुझे लगता है कि चुनाव आयोग ने माना है कि 2018 से—यानी भाजा के सत्ता में आने के बाद से—कोई एजेंडा सर्कुलेट नहीं किया जाता, कोई मिनट्स सर्कुलेट नहीं किए जाते। कई सदस्यों वाली संस्था बिना एजेंडा, बिना मिनट्स के कैसे काम कर सकती है? श्री जोशी और श्री संधू ने कैबिनेट सेक्रेटरी को पत्र लिखे हैं—एक ही दिन अलग-अलग पत्र। उन पत्रों को सार्वजनिक किया जाए। या तो चुनाव आयोग उन पत्रों को सार्वजनिक करे, या कैबिनेट सेक्रेटरी को उन पत्रों को सार्वजनिक करना चाहिए। पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री चिदंबरम ने इंडियन एक्सप्रेस की उस रिपोर्ट के बाद चुनाव आयोग के बयान का भी जिक्र किया जिसमें कहा गया था कि दो चुनाव आयुक्तों ने कुछ अहम फैसलों पर अपनी असहमति जताई थी, उन्होंने कहा कि संबंधित फाइलों को सार्वजनिक किया जाना चाहिए। चिदंबरम ने कहा हमारा आरोप है कि मुख्य चुनाव आयुक्त बीजेपी के लिए काम कर रहे हैं। वह बीजेपी का प्रतिनिधित्व करते हैं। अगर चुनाव आयोग ने यह बयान जारी किया है कि सभी फैसले सर्वसम्मति से लिए गए थे, तो फाइलों को सार्वजनिक किया जाए। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने 10 महीनों में मतदाता सूची और डेटाबेस एक्सेस से जुड़े फैसलों और प्रक्रियाओं पर कम से कम 14 बार आपत्ति जताई थी। चिदंबरम ने कहा, श्री संधू और श्री जोशी ने कहा है कि ईसीआई आधिकारिक कम्युनिकेशन ईसीआई की मंजूरी के बिना जारी किए गए हैं। अगर ईसीआई की मंजूरी ली गई थी, तो फ़ाइल दिखाएं।

मैच फिक्सिंग वाले चुनाव से कैसे बनेगा देश का भविष्य : जीतू पटवारी

मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी गुरुवार रात परिवार सहित सीहोर के प्राचीन चिंतामन गणेश मंदिर पहुंचे।पटवारी ने राहुल गांधी द्वारा चुनावी प्रक्रिया को लेकर उठाए गए सवालों का उल्लेख करते हुए कहा कि राहुल गांधी ने देश के सामने सच्चाई रखने का काम किया है। अब देश की जनता को तय करना है कि कथित 'मैच फिक्सिंग' वाले चुनावों से देश का भविष्य बनेगा या लोकतांत्रिक व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही कायम रखने वाली राजनीति से। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि सवाल केवल किसी एक चुनाव का नहीं, बल्कि लोकतंत्र और संविधान में जनता के भरोसे का है। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि चुनावी प्रक्रिया को लेकर संदेह पैदा होते हैं तो क्या देश का लोकतंत्र मजबूत रह पाएगा। पटवारी ने कहा कि इन सवालों का जवाब सत्ता और निर्वाचन व्यवस्था को देना चाहिए। वहीं आंबेडकर की तस्वीर हटाए जाने के सवाल पर पटवारी ने कड़ी आपत्ति जताई। उन्होंने इसे महापुरुषों के सम्मान से जुड़ा गंभीर मुद्दा बताते हुए भाजपा पर निशाना साधा। पटवारी ने आरोप लगाया कि भाजपा की राजनीति में नफरत और विभाजन को बढ़ावा दिया जा रहा है। पटवारी ने कहा कि कांग्रेस इन मुद्दों को लेकर सड़क से लेकर संस्थागत स्तर तक संघर्ष करेगी। उन्होंने दावा किया कि जनता चुनावी प्रक्रिया से जुड़े पूरे घटनाक्रम को देख रही है और लोकतंत्र से जुड़े सवालों का जवाब समय आने पर देगी। उनके बयान के बाद सीहोर की राजनीति में चुनावी पारदर्शिता का मुद्दा एक बार फिर केंद्र में आ गया है। पटवारी के साथ जिला कांग्रेस अध्यक्ष राजीव गुजराती, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष घनश्याम यादव, विवेक राठौर सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद थे।

मुझे विपक्ष की आलोचनाओं से नहीं पड़ता फर्क : विजय

» सीएम बोले- डीएमके पर सवाल जारी रहेंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय ने कहा कि उनकी 'मोटी चमड़ी' के कारण विपक्ष, खासकर द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) की आलोचनाओं का उन पर कोई असर नहीं होता और वह बेझिझक उसके पुराने रिकॉर्ड पर लगातार सवाल उठाते रहेंगे। मुख्यमंत्री विजय छह अक्टूबर को होने वाले विधानसभा उपचुनाव के लिए मदुरांतकम सीट से अपनी पार्टी तमिलगा वेत्री कषगम (टीवीके) के उम्मीदवार मरगतम कुमारवेल के लिए प्रचार कर रहे थे। टीवीके प्रमुख ने द्रमुक की उस रणनीति पर भी निशाना साधा, जिसमें उनकी आलोचनाओं को पुराना बताकर खारिज किया जाता है।

उन्होंने दावा किया कि द्रमुक यह मानकर चलती है कि युवा पीढ़ी 50 साल पुराने भ्रष्टाचार के मामलों से अनजान है और इसी वजह से वह अपनी 'बेदाग छवि' बनाए रखने में सफल रही है। विजय ने कहा, 'जब मैं ये पुराने मामले उठाता हूं, तो वे हमारे खिलाफ घटिया और मानहानिकारक हमले करने लगते हैं।' उन्होंने कहा, 'क्या आपने 'मोटी चमड़ी' वाला मुहावरा सुना है? दुनिया में इसका सबसे बड़ा उदाहरण मैं हूं।इस क्षेत्र में आने से पहले मैंने 30-35 साल तक बहुत कुछ देखा है। इसलिए इनमें से कुछ भी मेरे लिए नया नहीं है। बल्कि मुझे लगता है कि यह भी काफी नहीं है और मैं इससे भी ज्यादा की उम्मीद करता हूं।

घबराया हुआ है चुनाव आयोग: जयराम

» बोले- फार्म 6 के ऑनलाइन संस्करण में भी गड़बड़ी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और चुनाव आयोग पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि युवा और पहली बार वोट देने वालों के लिए फॉर्म 6 में ऐसी जानकारी मांगी गई, जिससे उनके लिए मतदाता सूची में नाम जुड़वाने की प्रक्रिया मुश्किल हो सकती है। जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर दावा किया कि चुनाव आयोग ने एक तरफ युवा वोटरों के लिए खास एनरोलमेंट कैंप लगाने और सोशल मीडिया पर प्रचार करने का निर्देश दिया, जबकि दूसरी तरफ फार्म 6 के ऑनलाइन संस्करण में एसआईआर जुड़ी अतिरिक्त घोषणा जोड़ दी गई।

फॉर्म 6 का इस्तेमाल पहली बार मतदाता सूची में नाम जुड़वाने के लिए किया जाता है। जुलाई 2026 में इसके ऑनलाइन संस्करण में एक नई घोषणा दिखाई देने लगी। इसमें आवेदक से पूछा गया कि उसका नाम पिछली एसअसईआर की मतदाता सूची में था या उसके माता-पिता या दादा-दादी का नाम उस सूची में था. कई राज्यों में पिछली एसआईआर 000 के शुरुआती वर्षों में हुई थी। ऐसे में आज 18 साल के हो रहे युवाओं का अपना नाम उस पुरानी सूची में होना संभव नहीं है, क्योंकि उस समय उनका जन्म भी नहीं हुआ था। इसलिए नई घोषणा में माता-पिता या दादा-दादी की जानकारी का विकल्प महत्वपूर्ण हो गया। रिपोर्टों के मुताबिक, ऑनलाइन फॉर्म में इस घोषणा को गैर-जरूरी बताया गया था, लेकिन इसका जवाब दिए बिना आवेदक फॉर्म आगे जमा नहीं कर पा रहे थे। इसी बात को लेकर चुनाव आयोग के दो सदस्यों ने आपत्ति जताई थी।

इंडिया गठबंधन की 30 को दिल्ली में महाबैठक, आयोग पर चर्चा

इंडिया गठबंधन की 30 सितंबर को नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में एक महत्वपूर्ण बैठक होने की संभावना है। चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली, मतदाता सूची के स्पेशल इंटेंसिव रिविजन एसआईआर प्रक्रिया और मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ नए कदम उठाने जैसे गंभीर मुद्दों को लेकर यह बैठक आयोजित की जा रही है। इस बैठक में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और तृणमूल कांग्रेस के नेता अभिषेक बनर्जी के शामिल होने की पूरी उम्मीद है।

उत्तराखंड के पूर्व सीएम हरीश रावत को ईडी ने पूछताछ के लिए बुलाया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून । पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत को ईडी ने आज पूछताछ के लिए बुलाया है। इस दौरान वह अपनी मां की तस्वीर साथ लेकर ईडी दफ्तर पहुंचे। उन्होंने कहा कि अपनी मां, जगदंबा मां और धरती मां का स्मरण कर ईडी कार्यालय पहुंचा हूं। पिछले दिनों जब पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत हरिद्वार पहुंचे थे। यहां गंगा में दुग्धाभिषेक कर उन्होंने मां गंगा से आशीर्वाद लिया था।

प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। इस दौरान उन्होंने कहा कि मेरी बड़ी ताकत कांग्रेस के कार्यकर्ता हैं। ओएसडी पर लगे आरोपों पर हरीश रावत ने भाजपा सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि चुनाव से पहले सीबीआई और ईडी का खेल शुरू हो जाता है। कुछ समय बाद समझ में आता है कि इसके पीछे क्या हो रहा था।

भारत-वेस्टइंडीज के बीच पहला वनडे कल

» शुभमन गिल को नेट्स पर लगी चोट, मेहमानों ने नहीं किया अभ्यास

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तिरुवनंतपुरम। भारत बनाम वेस्टइंडीज वनडे सीरीज का पहला मैच 27 सितंबर को तिरुवनंतपुरम में खेला जाना है। दोनों टीमें इस मुकाबले के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। इसमें पूर्व कप्तान विराट कोहली और रोहित शर्मा भी खेलते हुए नजर आएंगे, इसलिए इसको लेकर रोमांच भी काफी बढ़ा हुआ है। इन दोनों की बल्लेबाजी पर सभी की नजर रहेगी। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान शुभमन गिल को वेस्टइंडीज के खिलाफ आगामी मुकाबले से पहले नेट्स पर चोट लगने से टीम की चिंता बढ़ गई। तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज की उठती हुई गेंद गिल की कोहनी पर जा लगी, जिसके बाद वह दर्द में नजर आए और करीब 20 मिनट तक उन्हें चिकित्सकीय मदद की जरूरत पड़ी।

गिल इसके बाद कुछ समय के लिए नेट्स से दूर रहे, लेकिन बाद में उन्होंने दोबारा बल्लेबाजी शुरू की। उन्होंने थ्रोडाउन का सामना किया और इसके बाद भारतीय टीम ने अपना अभ्यास सत्र समाप्त किया। चोट कितनी गंभीर है, इसे लेकर फिलहाल कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। इस बीच भारतीय क्रिकेट के दो अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली और रोहित शर्मा भी नेट्स पर साथ नजर आए। कोहली अफगानिस्तान के खिलाफ भारत के पिछले वनडे मुकाबले में नहीं खेले थे। दोनों दिग्गजों ने करीब 20 मिनट तक बल्लेबाजी का अभ्यास किया। वे एक-दूसरे से सटे नेट्स में बल्लेबाजी कर रहे थे और भारतीय गेंदबाजों के अलावा स्थानीय नेट गेंदबाजों के मिश्रित गेंदबाजी समूह का सामना किया। दोनों बल्लेबाज अभ्यास के दौरान सहज नजर आए। वेस्टइंडीज की टीम 23 सितंबर को तिरुवनंतपुरम पहुंच चुकी है, लेकिन शुक्रवार तक उसने मैदान पर अभ्यास नहीं किया था।

एशियन गेम्स: नेपाल ने अफगानिस्तान को पांच विकेट से हराया

निशिन। एशियन गेम्स 2026 में क्रिकेट में बड़ा उलटफेर हुआ है। शुक्रवार को कोरोगी स्पोर्ट्स क्लब में खेले गए ग्रूप ए के मुकाबले में नेपाल क्रिकेट टीम ने अफगानिस्तान को पांच विकेट से हरा दिया है। अफगानिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया था। टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में सात विकेट पर 102 रन ही बना सकी। जवाब में नेपाल ने 16 गेंद शेष रहते यानी 17.2 ओवर में पांच विकेट गंवाकर लक्ष्य हासिल कर लिया। अब अफगानिस्तान ने लीग चरण में अपने दो मुकाबलों में एक जीत और एक हार दर्ज की है। उसके पास अब कोई मैच बाकी नहीं है, लेकिन बेहतर नेट रन रेट के कारण वह तीन टीमों वाले ग्रूप ए की तालिका में शीर्ष पर है। नेपाल ने अपना पहला मैच जीत लिया है और अब वह अपने आखिरी लीग मुकाबले में बिना जीत वाली जापान की टीम से खेलेगा। लीग चरण में प्रत्येक टीम को केवल दो मैच खेलने हैं और हर ग्रूप की शीर्ष दो टीमें क्वार्टर फाइनल में जगह बनाएंगी। नेपाल अगर जापान को हरा देता है तो वह इस ग्रूप में शीर्ष पर रहते हुए क्वार्टर फाइनल में जाएगा। भारत का सामना ग्रूप-ए में ही दूसरे स्थान पर रहने वाली टीम से क्वार्टर फाइनल में होगा। यह मुकाबला 28 सितंबर को खेला जाएगा।

समाजवादी नेता राम गोविंद चौधरी को आखिरी सलाम

» बीमारी के बाद पीजीआई मे निधन, सपा नेता के निधन से सियासी गलियारों में शोक

» सपा प्रमुख अखिलेश यादव समेत नेताओं ने दी श्रद्धांजलि

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व नेता प्रतिपक्ष और समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता राम गोविंद चौधरी के निधन से प्रदेश के राजनीतिक गलियारों में शोक की लहर है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव शनिवार को लखनऊ के निशातगंज स्थित मेट्रो सिटी अपार्टमेंट पहुंचे और चौधरी के पार्थिव शरीर पर समाजवादी पार्टी का झंडा रखकर उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि दी। इस दौरान अखिलेश यादव भावुक नजर आए।

परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह समेत विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता और समर्थक भी उनके आवास पहुंचकर श्रद्धांजलि दे रहे हैं। अखिलेश यादव ने राम गोविंद चौधरी के निधन को समाजवादी आंदोलन और समाजवादी पार्टी के लिए बड़ी क्षति बताया। उन्होंने कहा, राम गोविंद चौधरी जी समाजवादी आंदोलन के नेता रहे और शुरुआती दौर में जिस समय समाजवाद की पहचान बनानी थी, उस पीढ़ी के वो लोग हैं।

कई बार रहे मंत्री

वर्ष 1990 से 1991 के बीच मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व वाली सरकार में उन्होंने उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री की जिम्मेदारी संभाली। वर्ष 2012 के विधानसभा चुनाव में बांसडीह से जीत दर्ज करने के बाद अखिलेश यादव के नेतृत्व वाली सरकार में उन्हें बेसिक शिक्षा और समाज कल्याण विभाग की जिम्मेदारी दी गई। वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में राम गोविंद चौधरी ने बांसडीह से फिर जीत दर्ज की। इसके बाद उन्हें उत्तर प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बनाया गया। वर्ष 2017 से 2022 तक उन्होंने इस पद की जिम्मेदारी संभाली। वह समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव भी रहे और पार्टी संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लंबे राजनीतिक जीवन के दौरान राम गोविंद चौधरी पूर्वांचल की राजनीति में समाजवादी पार्टी के प्रमुख नेताओं में शामिल रहे। उनके निधन पर पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ-साथ विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं की ओर से शोक संवेदनाओं का सिलसिला जारी है।

उनके ना रहने पर समाजवादी आंदोलन को क्षति : अखिलेश यादव

सपा अध्यक्ष ने कहा कि राम गोविंद चौधरी ने समाजवादी आंदोलन के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया और उनका पूरा जीवन संघर्ष में गुजरा। उन्होंने कहा, वह बहुत प्रभावी ढंग से अपनी बात को रखते थे। उनके ना रहने पर समाजवादी आंदोलन को क्षति हुई है। समाजवादी पार्टी को बहुत बड़ी क्षति हुई है। इस दुख की घड़ी में हम सब समाजवादी लोग उनके परिवार के साथ हैं।

लखनऊ से लेकर बलिया तक शोक की लहर

राम गोविंद चौधरी के निधन पर बलिया के बांसडीह से भाजपा विधायक केतकी सिंह ने भी शोक जताया। उन्होंने कहा कि उनका निधन पूरे क्षेत्र और उत्तर प्रदेश के लिए अपूरणीय क्षति है। वैचारिक मतभेदों के बावजूद वह राजनीति में उनके लिए अभिभावक के समान थे। केतकी सिंह ने कहा कि जनसेवा, जमीनी संघर्ष और समाजवादी विचारधारा के प्रति राम गोविंद चौधरी का योगदान हमेशा याद किया जाएगा। उन्होंने दिवंगत नेता की आत्मा की शांति और शोकाकुल परिवार को दुख सहने की शक्ति देने की प्रार्थना की।

परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने भी दी श्रद्धांजलि

परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह भी राम गोविंद चौधरी के आवास पहुंचे और उन्हें श्रद्धांजलि दी। उनके आवास पर राजनीतिक दलों के नेताओं, समर्थकों और परिचितों के पहुंचने का सिलसिला जारी रहा। पूरे परिसर में शोक का माहौल रहा। राम गोविंद चौधरी का राजनीतिक सफर छात्र राजनीति से शुरू हुआ। बलिया जिले से आने वाले चौधरी ने वर्ष 1977 के विधानसभा चुनाव में चिलकहर विधानसभा सीट से जीत दर्ज कर पहली बार विधानसभा में प्रवेश किया। इसके बाद उन्होंने उत्तर प्रदेश की राजनीति में अपनी अलग पहचान बनाई। राम गोविंद चौधरी के निधन पर उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने कहा, यह बहुत दुखद घटना है। वे एक लोकप्रिय नेता थे जिन्होंने संसद से लेकर सड़कों तक गरीबों, कमजोर वर्गों, पिछड़े वर्गों, दलितों और वंचितों के लिए लड़ाई लड़ी। हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे उनके परिवार को इस दुख को सहने की शक्ति दें।

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह की जयंती पर दी श्रद्धांजलि

» मल्लिकार्जुन खरगे ने आर्थिक सुधारों को सराहा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे व नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की जयंती पर शनिवार को उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और कहा कि सच्ची जनसेवा, समावेशी विकास और परिवर्तनकारी सुधारों की उनकी विरासत पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

खरगे ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में सिंह के योगदान को याद करते हुए यह भी कहा कि वह एक दूरदर्शी राजनेता थे और उनके ऐतिहासिक आर्थिक सुधारों ने भारत की विकास यात्रा को बदल दिया, नए अवसर पैदा किए तथा लाखों लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में मदद की। उन्होंने कहा, सिंह के सार्वजनिक जीवन की पहचान उनकी विनम्रता, ईमानदारी और बुद्धिमत्ता थी।

उन्होंने गरिमा और करुणा के साथ नेतृत्व किया तथा समावेशी विकास और कमजोर वर्गों के कल्याण को शासन के केंद्र में रखा। उनकी सरकार का अधिकार-आधारित ढांचा इस दृष्टिकोण की एक स्थायी मिसाल बना हुआ है।'' उन्होंने कहा कि ऐसे राजनेता की विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। सिंह का जन्म 26 सितंबर 1932 को पंजाब के गाह गांव में हुआ था जो अब पाकिस्तान का हिस्सा है। सिंह 2004 से 2014 तक प्रधानमंत्री रहे। 26 दिसंबर 2024 को उनका निधन हो गया था। असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा शर्मा ने एक्स पर लिखा, आज पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी को उनकी जयंती पर याद कर रहा हूं। देश के लिए उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएग। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि। सार्वजनिक जीवन और भारत की प्रगति में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा।

पीएम मोदी ने किया याद

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के जयंती पर पीएम मोदी से उनके देश सेवा में योगदान को लेकर याद करते हुए श्रद्धांजलि दी। उन्होंने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा, हमारे पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं. उन्होंने सार्वजनिक जीवन में कई साल बिताए और पूरी निष्ठा के साथ देश की सेवा की है।

प्रियंका ने कहा-भारत के विकास को ऊंचाई दी

कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने भी पूर्व पीएम मनमोहन सिंह को याद करते हुए एक्स पर श्रद्धांजलि दी है। उन्होंने लिखा, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी की जयंती पर उन्हें सादर नमन, एक कुशल अर्थशास्त्री एवं सफल राजनेता के रूप में डॉ. मनमोहन सिंह जी ने भारत के विकास को असाधारण गति दी और देश की समृद्धि को नए मुकाम पर पहुंचाया. अपनी दूरदर्शी एवं समावेशी आर्थिक नीतियों के जरिए उन्होंने हर तबके को समृद्ध किया. देश के विकास में मनमोहन सिंह जी के अभूतपूर्व योगदान को सदैव याद किया जाएगा। उनकी स्मृतियों को नमन किया। इसके अलावा पूर्व प्रधानमंत्री के जयंती पर कांग्रेस के ऑफिस के बाहर उन्हें पार्टी की तरफ से श्रद्धांजलि देते हुए होर्डिंग लगाए गए हैं।

नागालैंड में जहरीली शराब पीने से 19 लोगों की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोहिमा। नागालैंड में पिछले दो दिनों में कथित तौर पर ज़हरीली शराब पीने से कम से कम 19 लोगों की मौत हो गई है। पुलिस ने इन मौतों की जांच करने और राज्य में मिलावटी शराब की सप्लाई चेन का पता लगाने के लिए एक स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम-एसआईटी बनाई है।

बता दें कि राज्य में 1990 से शराब पर पाबंदी लागू है। पुलिस ने बताया कि कथित अवैध शराब पीने से मोकोकचुंग जिले में आठ और तुएनसांग जिले में 11 लोगों की मौत हुई है। सीनियर सुपरिटेंडेंट ऑफ़ पुलिस वेसुप्रा केज़ो ने शनिवार को कहा कि संदिग्ध मिलावटी शराब से हुई मौतों की जांच करने और शराब के स्रोत व सप्लाई चेन का पता लगाने के लिए एडिशनल सुपरिटेंडेंट ऑफ़ पुलिस आई। बुंगलांग चांग की अध्यक्षता में एक SIT का गठन किया गया है। मौत की वजह का पता लगाने के लिए पुलिस ने सैंपल फोरेंसिक जांच के लिए गुवाहाटी भेजे हैं।

सुप्रीम फैसला : टिकट न मिलने पर भी ट्रेन हादसे के पीड़ित को मिलेगा मुआवजा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने 2017 में गुजरात में चलती ट्रेन से गिरकर मारे गए एक व्यक्ति के माता-पिता को दिया गया मुआवजा बहाल करते हुए कहा है कि किसी मृत रेल यात्री के पास से टिकट बरामद नहीं होने मात्र से मुआवजे का दावा खारिज नहीं किया जा सकता।

न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां और न्यायमूर्ति ए. एस. चंदुरकर की पीठ ने गुजरात उच्च न्यायालय का वह आदेश रद्द कर दिया, जिसमें महेशभाई के माता-पिता को दिया गया मुआवजा खारिज कर दिया गया था। महेशभाई 27 सितंबर 2017 को अहमदाबाद के रास्ते सूरत जा रहा था और वह ट्रेन में अचानक झटका लगाने के कारण सामान्य डिब्बे से नीचे गिर गया था। पीठ ने शुक्रवार को कहा, उच्च न्यायालय ने रेल टिकट नहीं मिलने को जरूरत से ज्यादा महत्व दिया और पीड़ित के पिता द्वारा शपथ लेकर दिए गए बयान एवं इस तथ्य पर विचार नहीं किया कि पीड़ित एक महीने से अधिक समय तक अस्पताल में भर्ती रहा था। उपलब्ध तथ्यों एवं परिस्थितियों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पीड़ित एक वैध यात्री था और उसका टिकट बरामद नहीं होने के आधार पर मुआवजे का दावा खारिज नहीं किया जा सकता। रेलवे दावा अधिकरण ने 17 जून 2022 को माना था कि महेशभाई एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना का शिकार हुआ और वह ट्रेन से दुर्घटनावश गिरा था।

चारों ओर पानी ही पानी, जल प्रलय सा नजारा

शहर से गांव तक की सड़कें लबालब, पेड़ गिरे, राजधानी का हाल बेहाल, नगर निगम की तैयारियों की खुली पोल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में लगातार बारिश से जनजीवन प्रभावित हुआ है। कई इलाकों में जलभराव और पेड़ गिरने की घटनाएं सामने आई हैं। मौसम विभाग ने तेज हवाओं के साथ बारिश की चेतावनी जारी की है। बारिश के चलते 19 जिलों में स्कूल बंद किए गए हैं। किसानों की फसलों को भी नुकसान की चिंता है।

वहीं राजधानी लखनऊ का भी बुरा हाल है। शहर से लेकर ग्रामीण इलाकों में जल प्रलय का नजारा दिखाई दे रहा। पॉश इलाकों से लेकर गली मोहल्लों तक में जलजमाव से लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इन समस्याओं को देखकर नगरनिगम की तैयारियों की भी पोल खुल गई है। वहीं अभी उत्तर प्रदेश में बारिश का सिलसिला शनिवार को भी जारी रहने के आसार हैं। बृहस्पतिवार आधी रात के बाद शुरू हुई बारिश प्रदेश के लगभग सभी इलाकों में कहीं धीमी तो कहीं तेज रफ्तार से होती रही। लगातार बारिश के चलते जनजीवन प्रभावित हुआ है।

स्कूल बंद रखने का अदेश

बारिश की स्थिति को देखते हुए शनिवार को 19 जिलों में स्कूल बंद रखने का निर्णय लिया गया है। प्रदेश में नर्सरी से लेकर डिग्री कॉलेज तक के शिक्षण संस्थान बंद रहेंगे। चार जिलों में कक्षा आठ तक और अन्य जिलों में कक्षा 12 तक के स्कूलों में अवकाश घोषित किया गया है। बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए स्कूल बंद करने के प्रशासन के फैसले का सरोजनीनगर विधायक राजेश्वर सिंह ने समर्थन किया है।

नए मौसम तंत्र से बढ़ी बारिश

वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक के अनुसार, बंगाल की खाड़ी में बने नए मौसम तंत्र के पश्चिमी विक्षोभ के साथ मिल जाने से उत्तर प्रदेश में बारिश के तेवर और तीखे हुए हैं। शनिवार को प्रदेश में बारिश का दायरा और व्यापक होने की संभावना है। बारिश के कारण अधिकतर क्षेत्रों में तापमान में गिरावट आई है और कई जगह यह सामान्य से नीचे पहुंच गया है।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।
स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा